श्री श्याम शतक
ब्रह्मर्षि विश्वात्मा बावरा

श्री श्याम शतक

ब्रह्मर्षि विश्वात्मा बावरा

दिव्यालोक प्रकाशन
ब्रह्मर्षि आश्रम, विराट् नगर, पिंजौर, हरियाणा

प्रकाशक
दिव्यालोक प्रकाशन
ब्रह्मर्षि आश्रम, विराट् नगर, पिंजौर (हरियाणा)
फोन—०१७३३-६५१७०

सम्पादिका
ब्रह्मऋता परिव्राजिका

संस्करण : प्रथम
जून १९९४

मूल्य
१०१ रुपये

आवरण एवं कलापक्ष
जे० मार्टिन

प्रतियाँ
११००

शब्द-संयोजक
अजय प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

मुद्रक
शकुन प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

सम्पर्क सूत्र

1. ब्रह्मर्षि आश्रम, विराट नगर,
   पो.ओ. पिंजौर (हरियाणा) पिन 134102
   फोन 01733/65170, 65270
2. ब्रह्मर्षि योगाश्रम
   28-बी पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली
   फोन 011-2273660
3. ब्रह्मर्षि बावरा शिक्षा निकेतन
   माधोपुरी, गऊशाला रोड, लुधियाना
   फोन 0161/405565
4. ब्रह्मर्षि बावरा शिक्षा निकेतन (अंग्रेजी मीडियम)
   बेअन्तपुरा, चण्डीगढ़ रोड, लुधियाना
   फोन 0161/62406
5. श्री गीता रामायण सेवा संघ
   अशोक नगर, मोक्ष मार्ग, उदयपुर (राजस्थान)
6. Metaphysical Science Research Institute
   Sector 19-A, Chandigarh
   Ph. : 0172/31111
7. Brahmrishi Ashram
   114-Hammond Road, South-all (Midd-X) U.K.
   Ph. : 0181-571-3879
8. Brahmrishi Ashram
   717 Loosduinsweg, 2571 AM-Denhaag
   Nederland. Ph. : 070-3620961
9. Brahmrishi Ashram Hindu Temple
   448 Lancaster Street, West Kitchener,
   Ontario, Canada N2H4V9
   Ph. : 519-579-1486
10. Brahmrishi Ashram
    1246, North Mantua Street, Kent, Ohio-44240 U.S.A.
    Ph. : 216-678-3793
11. ब्रह्मर्षि प्राकृतिक चिकित्सालय योग आश्रम, पुरी फार्मस
    जोड़िया, रादौर रोड, यमुनानगर-135001 (हरियाणा)
12. Brahmrishi Ashram Mission School
    Bhuntar, Kulu (H.P.)

ब्रह्मर्षि विश्वात्मा बावरा जी महाराज

सौजन्य से

श्री अनिरुद्ध आशा पराग, डैनहाग, हालैण्ड

श्री शिव लीला बैजनाथ, लैद्सन्दम, हालैण्ड

दो शब्द

करुणानिधान भगवान् की करुणा प्रसाद से चार जनवरी १९९१ में जब हृदय चिकित्सा के पश्चात् कुछ स्वस्थ हुआ तो मार्च में श्री वृन्दावनधाम जाकर श्री बिहारी जी के दर्शनों की लालसा हुई। पूर्ण स्वस्थ न होते हुए भी हठवश श्री धाम में पहुँचा और श्री बिहारी जी के चरणों में उपस्थित होकर उन्हें प्रणिपात किया। उसी समय अचानक भगवान श्रीकृष्ण तत्त्व से सम्बन्धित कुछ वाक्य काव्यरूप में अभिव्यक्त हुए। सुखद आश्चर्य हुआ और इस अभिप्सा के साथ प्रभु से प्रार्थना की कि श्री चण्डिका शतक एवं श्री शिव शतक के समान ही प्रभु की मनोहर लीलाओं से सम्बन्धित श्री श्याम शतक लिखकर प्रभु के चरणों में समर्पित करूँ। प्रारम्भ के लगभग १२ छन्द वहीं लिखे गए लेकिन दैवयोग से श्री वृन्दावन धाम से जब दिल्ली आए तो अचानक फिर अस्वस्थ हो गया और पुनः एस्कॉर्ट्स अस्पताल में जाना पड़ा। उस समय श्याम शतक के जितने छन्द लिखे गए थे, वे तो वहीं रुक गए किन्तु अपनी व्यथा-कथा को सुनाते हुए अपने परम रक्षक भगवान् के श्रीचरणों में एस्कॉर्ट्स अस्पताल में ही पच्चीस छन्द लिखकर 'श्री हनुमान विनय पच्चीसी' उनके चरणों में समर्पित की और उनकी कृपा-प्रसाद से शरीर स्वस्थ हो गया। श्याम शतक पूर्ण करने की चाह बनी रही, किन्तु कविता सरिता अपनी कल्पना से नहीं प्रभु कृपा प्रसाद से ही प्रवाहित होती है। कुछ महीने पश्चात् जब लण्डन गया तो अचानक एक दिन फिर प्रभु की दिव्य शिशु लीलाओं का चिन्तन प्रारम्भ हो गया और सर्वेश्वर की पावन लीला की भावमयी अनुभूति कविता के रूप में स्वतः अभिव्यक्त होने लगी। यदा-कदा बीच में व्यवधान तो आता रहा किन्तु करुणेश के कृपा प्रसाद से ही यह श्याम शतक इस रूप में अभिव्यक्त हो सका है। समय-समय पर मेरे कई प्रिय शिष्यों ने इसे पुस्तक रूप में छपाने का आग्रह किया किन्तु कई प्रियजनों की यह धारणा बनी कि श्री सर्वेश्वर की सम्पूर्ण बाल लीला को छन्दोबद्ध करके इसे खण्ड-काव्य के रूप में प्रकाशित किया जाए। मैं भी सोचने लगा कि शायद श्री श्याम सुन्दर की ऐसी ही

इच्छा हो परन्तु वह कन्हैया बड़ा ही नटखट है; उसकी इच्छा के बिना तो यहाँ कुछ भी नहीं हो सकता, काव्य रचना तो दूर की बात। उसे जितना प्रिय था उतनी लीला की अभिव्यक्ति छन्दोबद्ध हो गई। भक्तजनों के लिए यह परम तृप्तिप्रदा होगी; आगे यदि उसकी रुचि हुई तो वह और भी लिखवा लेगा। इसी विश्वास के साथ सर्वेश्वर की केवल शिशु लीला १४८ छन्दों की लघु-पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कर प्रभु के शिशु रूप माधुरी रस के रसिक प्रेमी भक्तों के कर-कमलों तक पहुँचाने की अभिप्सा दिव्यालोक प्रकाशन के पुस्तक प्रकाशन विभाग की सम्पादिका मेरी प्रिय शिष्या ब्रह्मऋता ने प्रकट की और उसके लिए मैंने सहर्ष प्रभु इच्छा समझ स्वीकृति प्रदान कर दी। इसके प्रकाशन का व्यय हालैण्ड निवासी मेरे प्रिय शिष्य अनिरुद्ध आशा पराख और शिव लीला बैजनाथ ने वहन करने का आग्रह किया और उन्हें स्वीकृति दे दी। इसकी प्रेस कॉपी मेरी प्रिय शिष्या विश्व भारती और चिन्मय ज्योति ने तैयार की। इन सभी के परिश्रम का परिणाम यह प्रभु की शिशु माधुरी से पूरित श्री श्याम शतक प्रेमी पाठकों के हाथों में पहुँच रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रभु के इस शिशु-चरित्र को पढ़ने और समझने से भक्तजनों को अनुपम आह्लादयुक्त आनन्द की अनुभूति होगी। अन्त में इस पुस्तक को पाठकों तक पहुँचाने में प्रयत्न करनेवाले तथा सहयोग करनेवाले अपने सभी प्रियजनों को अपनी शुभाशीष प्रदान करता हूँ—प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वह सभी को ऐसी योग्यता एवं सामर्थ्य प्रदान करे जिससे उनके दिए हुए कार्य को कुशलता के साथ सम्पन्न करते रहें।

२९-३-९४

सभी का शुभेक्षु

विश्वात्मा बावरा

१.

वेद अवतारिणी तूँ विधि बुद्धि धारिणी तूँ।
जगत प्रसारिणी तूँ हेतु उत्पत्ति है॥
चेतना प्रदायिनी तूँ भाव सरसायिनी तूँ।
पाथ दरशायिनी तूँ जीवन की गति है॥
मातु वरदायिनी तूँ बोध की विधायिनी है।
संत सुखदायिनी को भावति बिरती है॥
बावरा अनारी परयो शरण तिहारी अंब।
नाथ गुणगाइबे को चाहत सुमति है॥

२.

दोऊ कर जोरि करौं विनय विनायक सों।
करुणानिधान करि करुणा पसीजिये॥
मति अति थोरि मोरि लालसा महान हिय।
प्रणत अधीर देखि दया दृष्टि कीजिये॥
कामना नहीं है ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पत्ति की।
प्रभु गुणगान चाहौं बुद्धि ऐसी दीजिये॥
ज्ञान के निधान देवगण में प्रधान देव।
बावरे अबोध को प्रबोध करि दीजिये॥
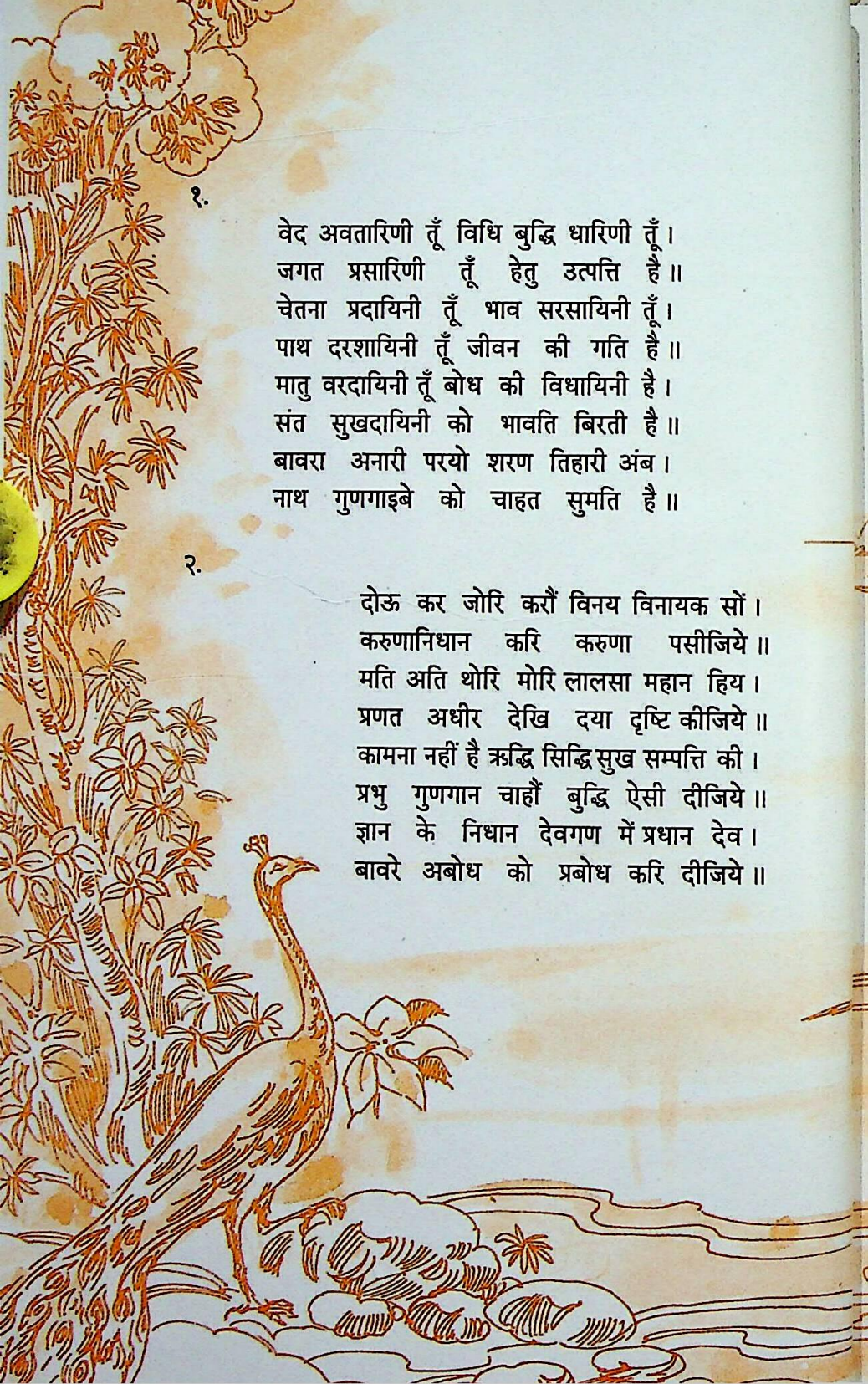
३.

परिधि पै बिंदू ज्यों अनन्त ब्रह्माण्ड राजैं।
अति गतिशील याते उपजि बिलात है॥
व्यास चिदाकाश सों त्रिदेव पर्यन्त जीव।
वारिधि तरंग जिमि प्रगटि समात है॥
गति उत्पत्ति को है परम आधार केन्द्र।
कर्षण करत ताते कृष्ण कह्यो जात है॥
केन्द्र से परिधि चिद्धारा सोइ राधा तत्त्व।
बावरा करत कर जोरि प्रणिपात है॥

४.

ब्रह्मचक्र पावन निकुंज में विराजैं नित्य।
चिद्घनश्याम साथ चिति शक्ति राधिका॥
चित्त की असंख्य वृत्ति गोपिन को यूथ सदा।
सेवा में लिए दिव्य वैभव प्रसाधिका॥
श्यामाश्याम सहचरी समूह संग क्रीड़ा करैं।
अद्भुत अनूप महाभाव की सुसाधिका॥
बावरा बखानै रस रसिक सुजान जानैं।
मानत अजान ताहि मायिक उपाधिका॥

५.

पावन प्रकाश परमेश को परम भाव।
अति गतिमान सो गोलोक व्रजधाम है॥
रसमयी धार विश्व प्राण को आधार सोई।
राधिकावतार चिद्घन घनश्याम है॥
गोपी गऊ ग्वाल हैं गोपाल को विलास मात्र।
चिद् तत्त्व एक भिन्न रूप भिन्न नाम है॥
जग खिलावर है विहार प्रिया प्रियतम को।
बावरे समुझि हिय होत अभिराम है॥

६.

शक्ति है स्वतन्त्रा परा परम आह्लादिनी जो।
विरचि अनन्त चित्त चेतना भरति है॥
या विधि असंख्य जीव भाव को जनमि आपु।
प्रिय के प्रमोद हेतु कौतुक करति है॥
इन्द्रिय समूह गऊ ग्वाल मतवालो मन।
बुद्धि वृत्ति गोपिन में भावना भरति है॥
चिति को प्रकाश चिद्घन को विलास देखि।
बावरे रिझाई प्रिय उर में धरति है॥

७.

व्याकुल वसुन्धरा अमित अघ ओघ भार।
धेनु रूप धारि जाई देवन पुकारी है॥
असुर प्रभाव महापाप को प्रताप बाढ़यो।
सहि नहीं जात मो पै बोझ अति भारी है॥
धरा की व्यथा की कथा सुनि देवपाल देव।
लिए ताहि साथ विधि लोक को सिधारी है॥
बावरे विरंचि सुनि दुखद कहानी कह्यो।
धरौ उर धीर तव रक्षक मुरारी है॥
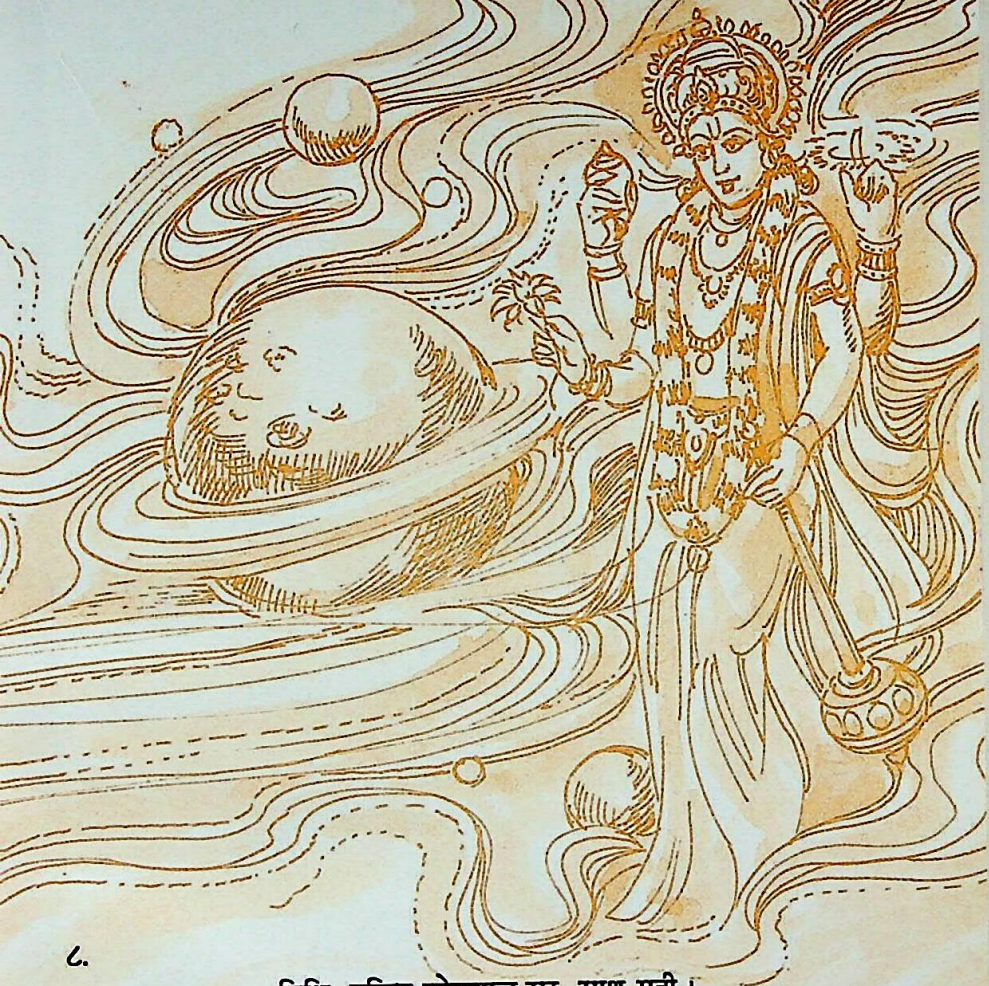
८.

विधि हरिहर लोकपाल सुर साथ मही ।
लाई है गुहार गौलोक नाथ ध्याई कै ॥
करुण पुकार सुनि करुणानिधान कह्यो ।
धरौ उर धीर पीर हरिहौं मैं आई कै ॥
पृष्णि औ सुतपा वसुदेव देवकी को रूप ।
जन्मेऊ भूलोक मांहि मथुरा में जाइ कै ॥
बावरे तनय तासु होइहों महिभार हरी ।
साधु सुख देहौं पाप ताप को मिटाई कै ॥

९.

परम गंभीर गिरा सुनि सर्वेश्वर को।
मुदित त्रिदेव देववृंद मुनि गण भो॥
अमित उछाह उर वसुधा प्रसन्न भई।
आपु प्रभु अइहैं जानि आनंद मगन भो॥
साधु श्रुति सुकृति महान तपी भक्त जेते।
परम प्रसन्न मानि पूर्ण स्वपन भो॥
करुणानिधान नर रूप अवतार लैहैं।
बावरे से दासन्ह को जीवन को धन भो॥

१०.

सोमवंश पावन प्रगट यदुवंश तामै ।
शूरपुत्र साधु वसुदेव भाग्यवान है ॥
भोजवंशी देवक की सुन्दरी सुता को ब्याही ।
चल्यो निजधाम कंस बन्यो रथवान है ॥
सकल उछाह अपहारिणी आकाशवाणी ।
भई ततकाल कियो ताहि सावधान है ॥
देवकी की आठवीं सन्तान तव काल होइहैं ।
बावरे मिटइहैं तोर महा अभिमान है ॥

११.

सुनि नभवाणी खल खड़ग उठाई लियो ।
काटिबो चहत मूढ़ देवकी के सर को ॥
संकट विचारि धरि धीर वसुदेव कह्यो ।
उचित न तात यह तोसों वीरवर को ॥
अबला नहीं है तव काल तासु लाल होइहैं ।
दीखत न काज कोऊ आज यहाँ डर को ॥
याको नवजात शिशु सबै तोहि आनि दइहौं ।
बावरे कहत साखी राखी हरिहर को ॥

१२.

सत्य के उपासी महासंकट हटाई दियो ।
दम्पति को राख्यो बंदीगृह में बसाइ कै ॥
एक एक लाल को लियाइ देत दानव को ।
दुष्ट होत तुष्ट यमलोक को पठाइ कै ॥
सातवें गर्भ के अर्भ को निकालि देव ।
थाप्यो ताहि रोहिणी की कोख महुँ लाइकै ॥
आठवें की बारी जानि सांची नभवाणी मानी ।
बावरे निहारें राह सबै अकुलाइ कै ॥

१३.

दीन दुख हारि असुरारि महि भार जानी ।
असुर निपातन को प्रण चित्त धारी हैं ॥
भक्त हित हेतु नर रूप में प्रकट होइ कै ।
करिहौं चरित्र चारु हिय में विचारि हैं ॥
प्रभु की कला की ज्योति उतरि धरा पै आई ।
देवकी के गर्भ माहिं सर्वसुखकारी हैं ॥
भृकुटि विलास विश्व उपजि बिलात जाके ।
बावरे के नाथ सोइ करुणावतारी हैं ॥

१४.

झंखत है बैठि वसुदेव देवकी के साथ ।
बंदीगृह राख्यो बिनु काज कंस पापी ने ॥
धर्म को बिसारि कियो घोर अत्याचार खल ।
हत्यो षट् पुत्र मेरो देव परितापीं ने ॥
सप्तम बचायो विधि गर्भ रोहिणी को दिये ।
मर्म नहिं पायो ताको दुष्ट संतापी ने ॥
बावरे बतायो देव आठवें गरभ माहिं ।
कह्यो आपु आवन को विश्व रूप व्यापी ने ॥

१५.

दम्पति अधीर ह्वैके आरत पुकारि कह्यो ।
पाहि परमेश पाहि कृपादृष्टि कीजिये ॥
दीन दुखहारी सदा भक्त हितकारी नाथ ।
शरण हौं तिहारी जानि आपनो पसीजिये ॥
आततायी कंस मेरो वंश को विध्वंस कियो ।
आस एक आखिरी संभालि याहि लीजिये ॥
बावरे अनाथ को हैं नाथ आपु दीनबंधु ।
कोख शिशु राखि कै सनाथ करि दीजिये ॥

१६.

महिमा अपार तेरो निगम पुकारि कहै ।
आरत अनाथन को नाथ ही शरण हैं ॥
अधम अधीन अति पाँवर मलीन दीन ।
ताको अवलम्ब एक रावरो चरण हैं ॥
करुणानिधान करि करुणा निहारि नेकु ।
आपु सर्वेश जग कारण करण हैं ॥
बावरे अधीर जन पीर को निवारि देहु ।
प्रभु को प्रताप ताप संकट हरण हैं ॥

१७.

वारन को वारि से उबारि लियो पल मांहि ।
चक्र से विदारि नक्र संकट निवारी है ॥
देव मुनि मानव की करुण पुकार सुनि ।
राम तनु धारि भूमि भार को उतारी है ॥
कृपासिंधु कृपा बरसायो गीध भीलनी पै ।
भालु कपि रातिचर मीत हितकारी है ॥
महिमा महान् सब सुकवि बखान करैं ।
बावरे की बेर काहे करत अबारी है ॥

१८.

करुण पुकार वसुदेव देवकी को सुनि।
करुणानिधान उर करुणा से भरिगो॥
अमृत त्रिपाद से उतरि एक पाद आयो।
धरा भई धन्य भक्ति प्रभुता पसरिगो॥
तनु घनश्याम कोटि काम छवि छीनि लेत।
सुषमा अपार कवि मति थिर करिगो॥
शंख चक्र गदा पद्म कुंडल किरीट धारे।
बावरे अनूप रूप देखि के सिहरिगो॥
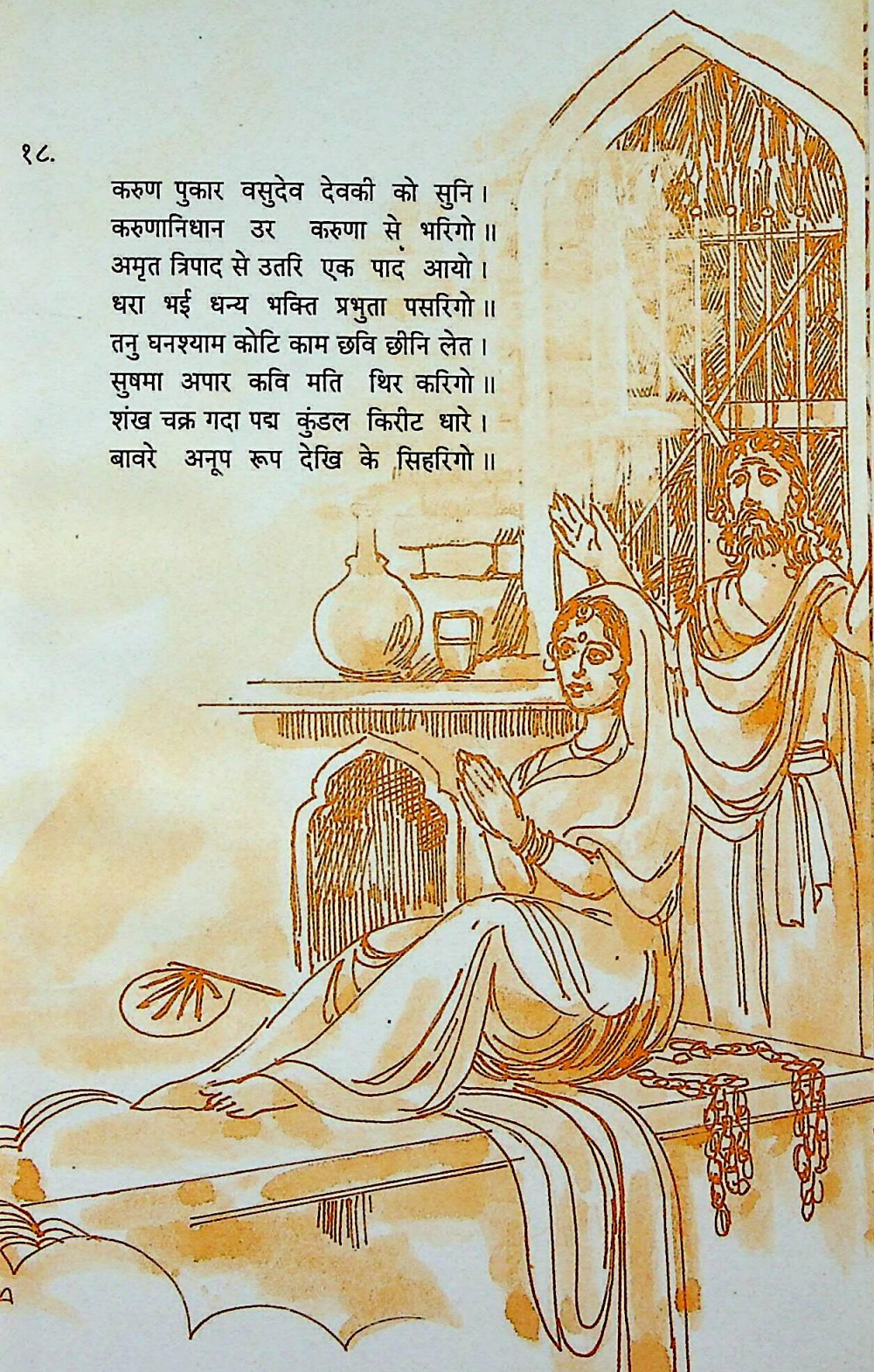
१९.

प्रथम गोलोक को भूलोक पै प्रगट कीन्हों ।
ब्रज चौरासी को प्रमाण बन्यो पावनों ॥
निज अंशभूत गोप गोपी गोवत्स गऊ ।
लीला को समाज साज परम सुहावनो ॥
यमुना के कूल वृक्ष लता गुल्म फूलि रह्यो ।
शीतल समीर बहै अति मन भावनो ॥
चिन्मय विलास हेतु सहचरी समूह साथ ।
आयो घनश्याम धन्य धरा को बनावनो ॥

२०.

नयनाभिराम छविधाम सर्वेश्वर को ।
देखि उर दम्पति को आनन्द अपार भो ॥
गर्भ मांहि अर्भ नहिं वात परिपूरि रह्यो ।
देवकी ठगी सी रही काह चमत्कार भो ॥
ब्रह्मादिक देव पति देववृन्द साथ लिये ।
बरसैं प्रसून नभ महाजयजयकार भो ॥
बावरे विषाद गयो तोम तम दूरि भयो ।
भक्त हित हेतु ब्रह्म पूर्णावतार भो ॥

२१.

प्रभु मुसकाई वसुदेव देवकी सो कह्यो।
दियो वरदान सो प्रमाण अब करिहैं॥
धारि शिशुरूप तव कंस कुल ध्वंस करि।
असुर समूह हति भूमि भार हरि हैं॥
ममता विहाइ पहुँचाउ मोहि गोकुल में।
नंदगृह जाइ तहाँ लीला बहु करि हैं॥
बावरे बुझाई ताहिं धीरज बँधायो नाथ।
भयो शिशु रूप ध्याइ दास भव तरि हैं॥

२२.

ब्रह्म को स्वरूप रसरूप वेद गान करैं।
सोइ शिशु रूप धारि ब्रज में प्रगट भो॥
रैन थी अँधेरी घटा घेरी घहरात नभ।
मातु पितु बंदी गृह योग अटपट भो॥
बावरे सराहैं वसुदेव देवकी के भाग्य।
जासु भक्तिभाव को प्रभाव उत्कट भो॥
परम प्रत्यक्ष भयो पावन प्रसाद लह्यो।
नंदगृह जानको आदेश चटपट भो॥

२३.

सोइ गयो पाहरु विमुक्त भयो बन्धन सो ।
खुलिगो कपाट पथ कंटक विहीन भो ॥
अद्‌भुत स्वरूप परमेश को प्रत्यक्ष देखी ।
उमग्यो आनंद उर मति गति हीन भो ॥
गोद में उठाइ मुख चूमति है बार बार ।
समुझि वियोग मातु वदन मलीन भो ॥
बावरे निहारि सुर धन्य कहैं देवकी को ।
त्रिभुवन ईश जासु अंक के अधीन भो ॥

२४.

व्याकुल विलोकि वसुदेव देवकी सो कह्यो ।
शिशु की सुरक्षा हेतु सुन्दर सुठाम है ॥
पावन प्रदेश जहाँ देव को आदेश भयो ।
परम सनेही सखा नंदजू को गाम है ॥
आनंद मनैहैं-सुख पैहैं सब गोपी ग्वाल ।
लाल हित यशुदा की गोद अभिराम है ॥
बावरे विचारि दैव प्रबल प्रभाव मानि ।
धरउ उर धीर जानि भलो परिणाम है ॥

२५.

देवकी प्रबोधि शिशु गोद में उठाइ लियो ।
हिय सो लगाइ दोउ नैन जल भरिगो ॥
साहस समेटि वसुदेव चल्यो गोकुल को ।
भानुजा निकट आइ अन्तर हहरिगो ॥
शिशु को संभारि अति धीरज हिय में धारि ।
पैठ्यो बीच वारि सुधि आपनी बिसरिगो ॥
वृष्टि घनघोर शोर पवन झकोर बहै ।
बावरे निहारि ताहि भीति हू भभरिगो ॥

२६.

प्रभु शिशु रूप में विराजैं लघु सूप मांहि।
शीश पै उठाये वसुदेव ठाढ़े पानी में॥
बूँद की झकोर तम घोर चहुँ ओर छायो।
सूझत न राह कहुँ थाह की निशानी में॥
चपला की चौंक में निहारि नेकु आगे बढ़यो।
उमग्यो उमंग देखि यमुना महारानी में॥
बावरे हरि के नित्य सेवक अनन्त देव।
फन को पसारि छत्र धारयो अवधानी में॥

२७.

रवि तनुजा को वारि बाढ़त उमंग लिये ।
देखि वसुदेव ताहि हिय में हहरिगो ॥
रैन अंधियारी वारि बरसै बयारि बहै ।
पार किमि जैहों याहि सोच उर भरिगो ॥
गोकुल को जानो पहुँचानो शिशु नंद धाम ।
लौट फिरि आनो देव काह विधि करिगो ॥
बावरे न अइहौं निशि मांहि फिरि बंदीगृह ।
गजब ढहइहैं चित्त चिंता से थहरिगो ॥

२८.

देखिकै अधीर अति भक्त उर पीर जानि ।
भानुजा की लालसा विचारि नाथ हरषे ॥
कृपा दरशाई पद पंकज बढ़ाइ दियो ।
यमुना कृतार्थ भइ देव पद परसे ॥
पूरि भई चाह रवि तनया ने राह दियो ।
पार वसुदेव जाई गोकुल में सरसे ॥
नंदजू के द्वार आयो खुल्यो है कपाट पायो ।
बावरे वियोग सुत जानि नैन बरसे ॥

२९.

नंद गृह पैठत ही अद्‌भुत प्रभाव देख्यो ।
निद्रा में निमग्न सुधि काहू को न तन की ॥
यशुदा के पास परि बालिका को रूप धारी ।
महायोगमाया बनि छाया श्यामघन की ॥
सुत को संभारि तासु तनया उठाई चल्यो ।
नैन भरि आयो दशा कहे कौन मन की ॥
बावरे बहुरि वसुदेव आयो बंदीगृह ।
सुता लिये गोद हिय पीड़ा प्राणधन की ॥

३०.

फिरि वसुदेव आयो बंद भयो बंदीगृह।
विधि की विचित्र गति देखि हिय हरषे॥
सुता को उठाई अंक देवकी लगाई लियो।
सुषमा निहारि अति स्नेह उर सरसे॥
आकुल अधीर उर पीर के निवारिबे को।
बार बार बालिका को चूमती अधर से॥
बावरे अजान नहिं जान अखिलेश्वरी को।
कंस भय मानि दोउ नैन नीर बरसे॥

३१.

दम्पति को भाव निज माया को प्रभाव देखि।
मातु सर्वेश्वरी रुदन अति ठानीं है॥
जागि गयो पाहरु सभीत धाइ कंस पाहिं।
जाइके सुनायो शिशु जन्म की कहानी है॥
देवकी के आठवें गर्भ को अर्भ जानि।
कह्यो सुर जाहि निज काल अनुमानी है॥
आकुल होय आइ कारागृह देखि बालिका को।
बावरे अजान मान्यो मृषा देव वाणी है॥

३२.

तनया लगाइ अंक देवकी बिलखि कह्यो।
देऊ प्राणदान तात देखु यह बालिका॥
बावरे नृशंस कंस झपटि सो छीन लई।
मारिबो चहत मूढ़ मानि निज घालिका॥
निबुकि आकाश जाइ अम्ब मुसकाइ कह्यो।
मोहि पहचानो खल जानु जगपालिका॥
काल तव आयो जाइ गोकुल विराजि रह्यो।
तासों न बचैगो दुष्ट गई कहि कालिका॥
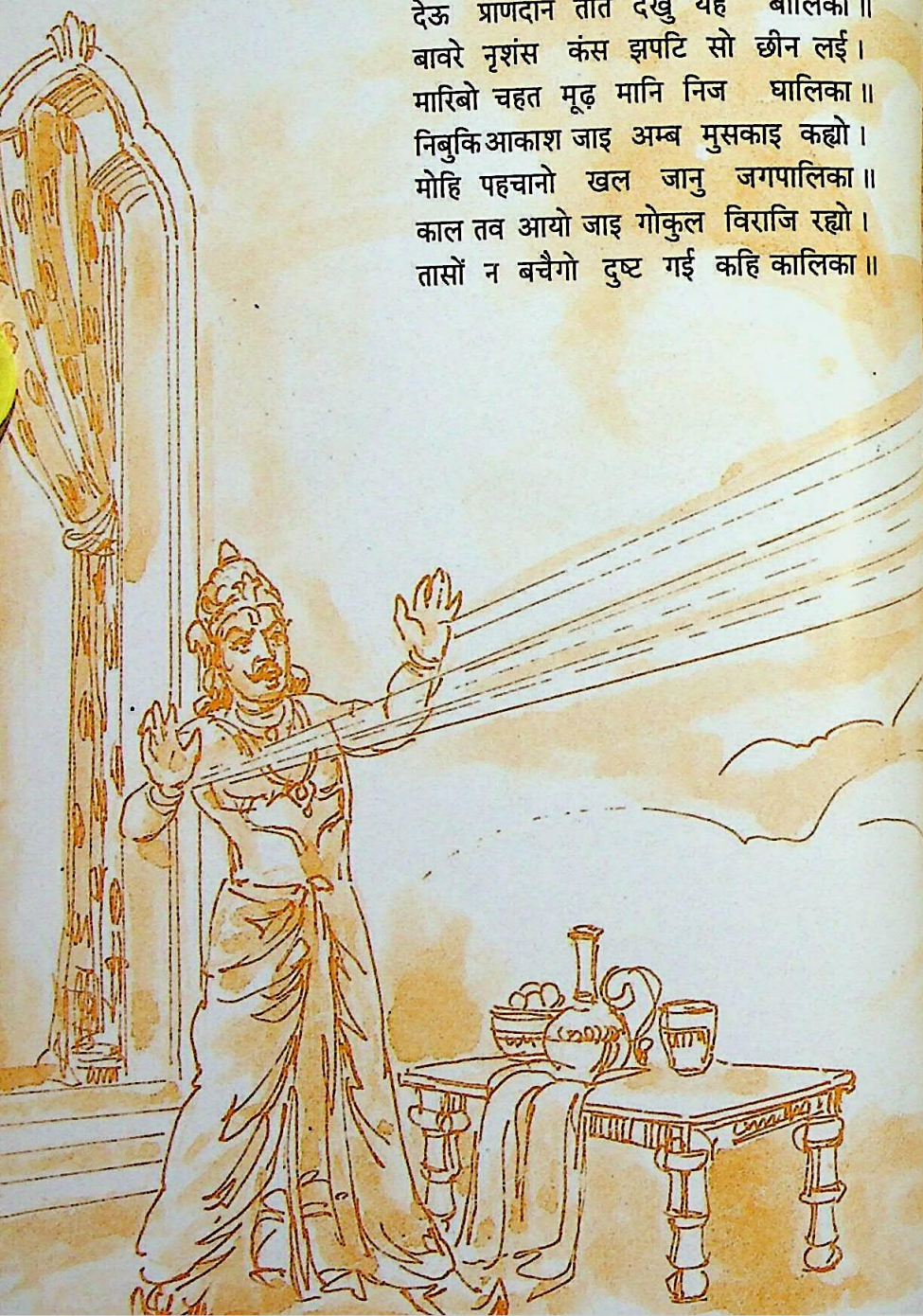
३३.

कंस को सचेत करि लोक कल्याण हेतु ।
अंबिका बिराजै आपु विन्ध्य गिरि आइकै ॥
गंगा के तीर गिरि गहबर गुफा में बैठि ।
हरै तासु पीर जो उपासै चित्त लाइकै ॥
अष्टभुजा अंब योगमाया सर्वेश्वर की ।
देव मुनि मानव अवराधैं नित्य आइकै ॥
बावरा अजान ताकि महिमा बखानैं किमि ।
करै गुणगान जासु नेति श्रुति गाइकै ॥

३४.

भोर भयो नंदधाम आनंद उछाह बाढ़यो ।
यशुमति जायो शिशु अद्‌भुत अनूप है ॥
मानो सबै त्रिभुवन की सुषमा सकेली लाइ ।
विरचयो विरंचि यह श्यामल स्वरूप है ॥
बाजत बधाई गाइ गोपी गोप नृत्य करैं ।
अमित उल्लास जनु देवन्ह को भूप है ॥
बावरे सराहैं सुरभाग्य नंदरानी जू को ।
जासु गोद माहिं ब्रह्म भयो बाल रूप है ॥

३५.

लीला है विचित्र भगवन्त को न अन्त याको ।
सुकवि बखानै नेति नेति श्रुति गाई है ॥
पुत्र भयो देवकी को बन्दीगृह मथुरा में ।
गोकुला में नन्दगृह बाजत बधाई है ॥
मंगल सुद्रव्य साजि थाल लिये हाथनि में ।
गावत सुवासिनि सुसोहिलो सुहाई है ॥
आवति है नन्दधाम देखिके अनूप रूप ।
बावरे बखानै सुठि लाल की लुनाई है ॥

३६.

मुदित सुबोध नंद सुमति यशोदा संग।
ब्रह्म शिशु गोद पाई आनंद मगन भो॥
देववृन्द देखि कै सराहैं भाग्य दम्पति को।
बरसैं प्रसून जय पूरित गगन भो॥
गोकुला निवासी सुनि धाई आई नंदधाम।
बालक विलोकि कै उछाह जन मन भो॥
बाजत बधावनो सुहावनो लगत अति।
बावरा निहारि कै निहाल तेहि छन भो॥

३७.

धन्य गाँव गोकुल है धन्य यशुदा की गोद।
जहाँ शिशु रूप सर्वेश्वर विराजहीं॥
नरवर वीरन अहीरन को भाग्य बड़ो।
अमित उछाह लै अनेक साज साजहीं॥
सिद्ध मुनि देखिकै सिहात औ सराहत हैं।
चाहें ब्रज बसिकै निहारें ब्रजराजहीं॥
बावरा बखानै किमि मति अनुमाने ताँहि।
बाजत बधायो अति घन जिमि गाजहीं॥

३८.

अद्‌भुत अनूप शिशु रूप को निहारत ही।
ब्रज नर नारिन को मोद मन भरिगो॥
अमित उमंग उर चंग डफ ढोल बाजै।
नृत्य करि गावैं सुधि आपनी बिसरिगो॥
आनंद अपार नंद द्वार पै उमड़ि आयो।
सोहिलो निनाद चहुँ ओर में पसरिगो॥
बावरा विलोकि सुख सिंधु मातु अंक मांहि।
लह्यो अभिराम कवि कोटि कुल तरिगो॥

३९.

कोउ कहै सुषमा को सार तिहुँ लोकन को ।
विधना बनायो शिशु रूप मन भावनो ॥
कोउ कहैं सुकृत समूह ब्रजवासिन को ।
बाल रूप धारि आयो परम सुहावनो ॥
कोउ कहैं धन्य यह गाम नंदधाम जहाँ ।
प्रगट्यो परेश ब्रज कियो जग पावनो ॥
देखती ठगी सी रही मति गतिहीन भई ।
बावरो चहत तउ नाथ गुण गावनो ॥
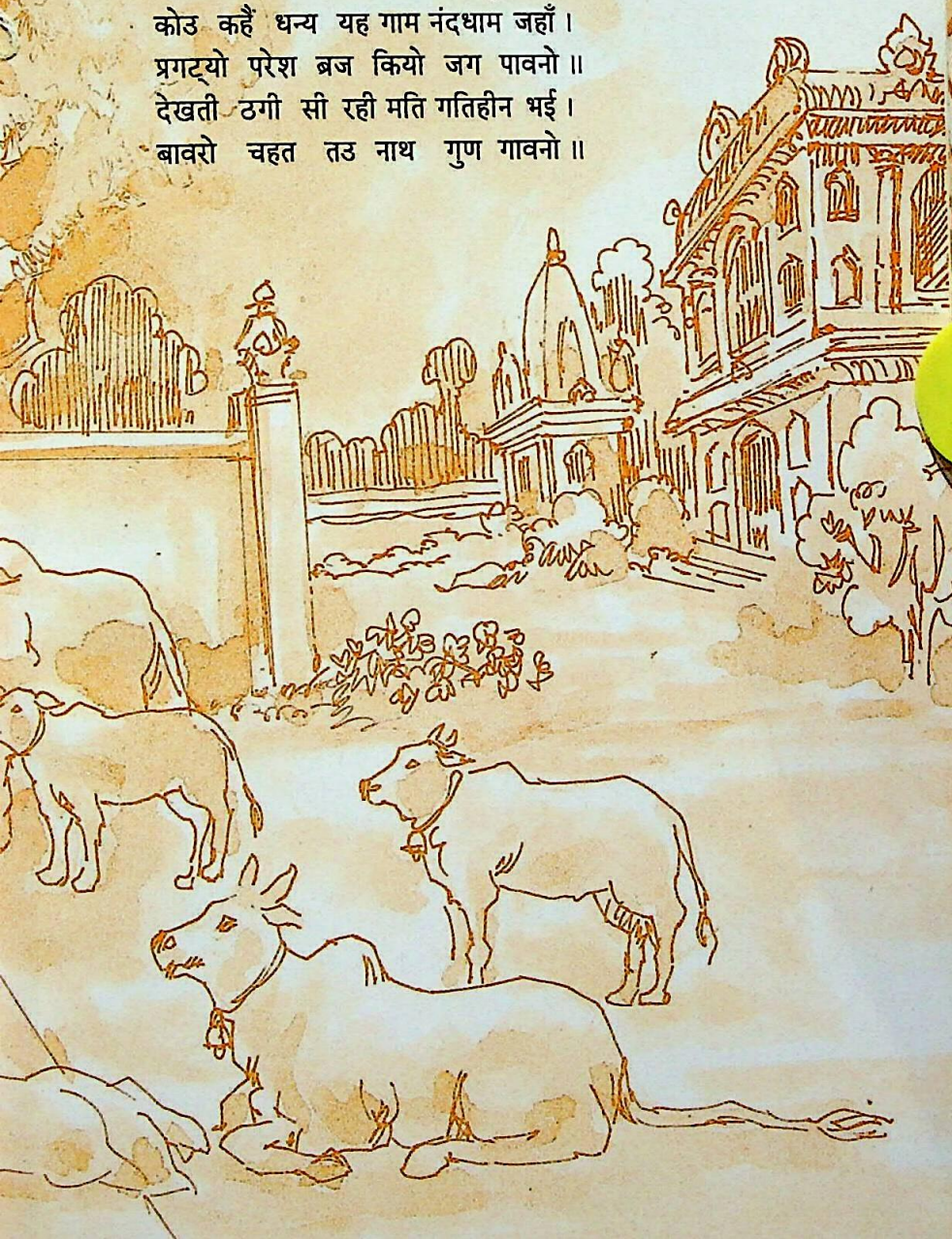
४०.

ब्रज बनितान को न कल पल एक परै।
गोधन बिहाई गृह नंदधाम धावहीं ॥
बालक बिलोकि कै बिसारि सुधि बुधि जात।
तन मन बारि बारि मंगल मनावहीं ॥
करत निछावरि बिसारि वित्त देत सबै।
रह्यो धन धान्य पूरि भूरि तेहिं ठावहीं ॥
नंदजू के द्वार पर्‌यो सम्पति अपार देखि।
बावरे से याचक को काह मन भावहीं ॥

४१.

भूल्यो सब काम निजधाम गोप गोपिन को।
एक घनश्याम छवि हिय में समाइगो ॥
धाई धाई आइकै निहारैं शिशु मोद भरैं।
लहैं अभिराम नवनिधि जनु पाइगो ॥
घर घर बाजत बधावनो रैन दिन।
महा सुख राशि मानो गोकुला में छाइगो ॥
बावरा बखानैं सुरवृन्द तहँ बास चाहैं।
भाग्य ब्रजवासिन को देखि ललचाइगो ॥

४२.

जानि नहिं जात निशि बासर सिरात किमि।
गोकुला निवासी महामोद में मगन हैं॥
सुख के निधान भगवान् शिशु रूप जहाँ।
यशुदा के पालने में खेलत छगन हैं॥
बावरे उपासि देव पितर मनावैं सभी।
सगुन विचारि जानि सुन्दर लगन हैं॥
गोरस हरिद्रा वारि डारैं एक एकन पे।
हास परिहासन्ह सों पूरित गगन हैं॥

४३.

सप्त नव साजि व्रज सुन्दरी समूह संग।
मंगल कलश कर लिए गज गामिनी॥
चली नंदधाम श्याम छवि अवलोकिबे को।
लालसा हिय में लिये शुचि सुखधामिनी॥
अमित उमंग अंग अंग बल खात जात।
देखि रूप वैभव सिहात सुरभामिनी॥
रति मदहारिनी बिलोकि गोप नारिन को।
बावरा नमत जानि नाथ अभिरामिनी॥

४४.

वेद नेति नेति जाकि महिमा बतावत हैं।
देवन त्रिदेवन को ध्यान में न आवई॥
सोइ परब्रह्म बनि छौना नंदराय जू को।
खेलत खिलौना लिए अति सुख पावई॥
भुवन अनन्त जासु अंश में विराजि रह्यो।
ताहि ब्रजनारि लघु पालने झुलावई॥
बावरे अपार कवि प्रभुता बखानै जाकी।
ताको महतारी लिए गोद में खिलावई॥

५.

अकल अनीह अज निगम बतावै जाहि ।
आगम कहत जाकी प्रभुता अपार है ॥
लघुतम जन्तु ब्रह्मलोक पर्यन्त जीव ।
अमित ब्रह्माण्ड जाके उदर मंझार है ॥
ऐसो परमेश्वर को लालन बनाई निज ।
पालने सुलाए राख्यो गोकुल को ग्वार है ॥
भक्ति को प्रभाव किधौं प्रभु को स्वभाव ऐसो ।
बावरा निहारि नेकु जात बलिहार है ॥

४६.

चरित विचित्र अवलोकि सर्वेश्वर को ।
बावरा बखानैं किमि समुझि न आवई ॥
देखउ अजन्मा की जन्म की छठि को राति ।
मातु शिशु गोद लिए विधि को मनावई ॥
भाग्य के लिखारी देव विनय हमारी सुनौ ।
महिमा तुम्हारी बड़ो वेद जस गावई ॥
बालक निहारि मेरो सुकृत संभारि सबै ।
लिखौ अंक भाल जाते लाल सुख पावई ॥

४७.

प्रभुता विचारती निहारती स्वरूप श्याम।
मति भई भोरि अति गति नहीं पावती॥
कौतुक ललाम देख्यो नंदजू को धामवाम।
गोद लै निरंजन को अंजन लगावती॥
वारना करत मातु अशुभ निवारिबे को।
देति बहुदान देव पितर मनावती॥
बावरे विश्वम्भर को अम्बर ओढ़ाइ निज।
हिय सो लगाई मल्हराई पय प्यावती॥

कबहूँ उमंग में उठाई कंठ लाई लेति।
अंग लपटाइ उर सीतल करति है॥
कबहूँ संवारिके शृंगारति विविध भांति।
देति पट डारि दुष्ट दृष्टि से डरति है॥
लाल मुख निरखि निहारति ठगी सी रहै।
सुषमा अपार मानो नैनन भरति है॥
बावरे यशोमति की गति मति जानै कहाँ।
चिन्तन किये ते भवताप को हरति है॥

४९.

भानु के उये से जिमि तोम तम भागि जात ।
कमल प्रफुल्लित हो सोहत सरनि में ॥
श्याम मुख देखि तिमि दोष दुख दूरि भयो ।
भूरि सुख छायो ब्रज गाँव के घरनि में ॥
रैन दिन लाल को संभारती रहति सदा ।
धन्य यशुदा सो कोउ नारि न धरनि में ॥
बावरे सुछवि चित्त चिन्तन करत याको ।
ताहिं श्रम काह भवकूप के तरनि में ॥

५०.

नंद को आनंद महामोद ब्रजवासिन को ।
जात नहीं जान्यों किमि मास दिन बीतिगो ॥
देह गेह नेह गयो स्वजन स्नेह गयो ।
जगत प्रतीति जग जीवन सों प्रीति गो ॥
भूख प्यास दूरि भई नैनन सो नींद गई ।
जतन बिना ही सबै मानो मन जीति गो ॥
श्याम छविं छाकि छकै पलकिनि को पाँव थके ।
बावरे विभोर भयो जानी भवभीति गो ॥

५१.

शुभ दिन आयो शिशु सूतक सिराइ गयो ।
बाजत बधायो नंद द्वार पै गहागहै ॥
मोतिन पुराय चौक आंगन सजायो बहु ।
विप्रन बुलाय पूजि दान मान देइ रहे ॥
लालसा हिय में नेकु लाल को निहारिबे की ।
अधिक अधीर सबै धीर काहि को कहै ॥
राजति यशोदा सुत गोद लिये मंडप में ।
बावरे विलोकि नैन लोकिबो सदा चहै ॥
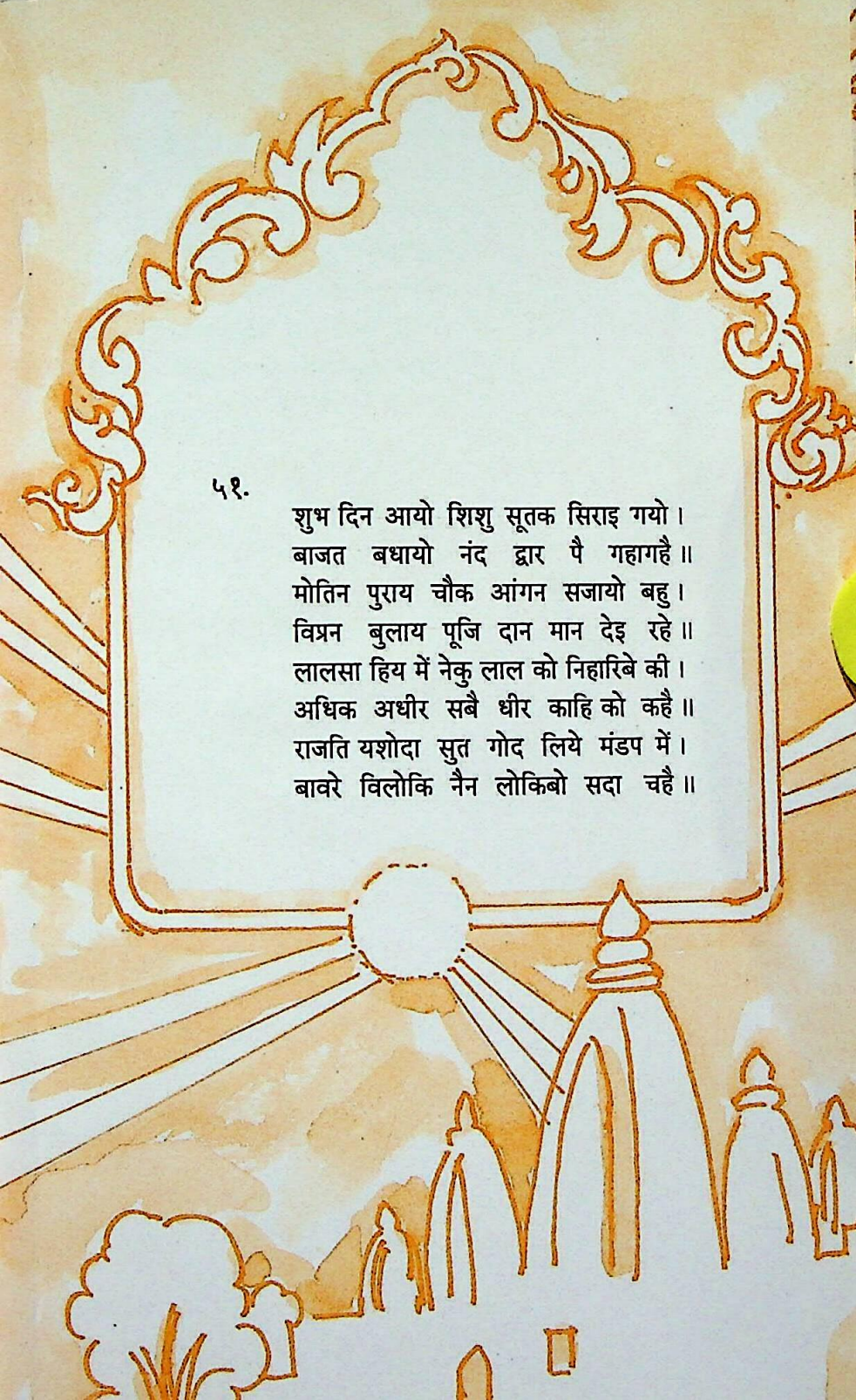
देखि के अपार भीर द्वार नंदराय जूके।
उमड़यो उमंग लियो याचक हँकारि कै॥
अमित उदार उर चाहैं सर्वस्व देन।
भूषण वसन बहु देत वारि वारि कै॥
कुलगुरु आई देव ध्याइ स्वस्तिवाचकरि।
धर्‌यो कृष्ण नाम वेद सम्मत विचारि कै॥
बावरे के नाथ मातु गोद में विराजि रह्यो।
देवता विभोर प्रभु कौतुक निहारि कै॥

५३.

गोद लिए मातु महामोद भरि आँखिन सों।
अंग अंग लाल को निहारति रहति है॥
अंक लिपटाई मुख चूमति है बार बार।
छगन मगन मल्हराई के कहति है॥
प्रभु गुन गावत मनावत पितर देव।
मंगल आशीष सब काहुँ से चाहति है॥
देखती ठगी सी सुत स्नेह में पगी सी रहे।
बावरे सरस धार उर से बहति है॥

५४.

केस घुघुरारे कारे कारे गभुआरे सीस।
रोचन विशाल भाल तिलक सजावती॥
सुन्दर कुटिल भौंह काम के कमान जनु।
नैन रतनारे तामे कज्जल लगावती॥
लटकई लटूरी लघु गोलक कपोलन पै।
मानो अलिवृंद अरविंद पै सुहावती॥
लाई के डिठौना निज छौना मातु गोद लिये।
बावरे अनूप छवि मोहि अति भावती॥

५५.

पुण्य की निधान मातु दिव्यता की खानि महा।
ब्रह्म शिशु रूप अंक राजति प्रमोद में॥
बलि बलि जात नील कंज सों निहारि मुख।
अधर अरुण खिलि जात हैं विनोद में॥
तनु द्युति श्याम पीत आंचल ओढ़ाइ तापै।
ठाड़ी लिए लाल को प्रफुल्लित आमोद में॥
बावरे अनूपम की उपमा बखानों किमि।
बाल घन सोहैं जिमि दामिनी की गोद में॥

५६.

तनु घनश्याम अंग भूषण लसत तापै।
पीत रंग झीनि सी झीगुँलिया सुहावती॥
नीरज नयन नीको रंजित हैं अंजन सों।
नासिका सुभग मुख छवि सरसावती॥
ललित कपोल लाल अधर चिबुक चारु।
सुषमा अपार कोटि मार को लजावती॥
बावरे संभारि निज अम्बर ओढ़ायो अंब।
बारिद सुवन मानो तड़ित छिपावती॥

५७.

चिद्घन ब्रह्म घनीभूत घनश्याम रूप।
बालक स्वरूप नंदधाम में विराजतो ॥
उबटि संवारि कै शृंगारि मातु मोद भरी।
अंग अंग विविध आभूषण सो साजतो ॥
पैंजनि पगनि चारु किंकनी लसत कटि।
करनि कडूलो कंठ मोतिन सो भ्राजतो ॥
पीत झीनि झिंगुली चमकी चपला सी रही।
बावरे विलोकि कै अनंग कोटि लाजतो ॥

५८.

श्यामल सरोरुह सो श्याम को सुघर मुख।
लोचन विशाल भाल तिलक सुहावनो ॥
चिक्कन कुटिल केश शोभित कपोलन पै।
श्रवण सुभग छवि अति मन भावनो ॥
अंगद भुजनि कर कंज उर हार राजै।
काछनी रुचिर कटि लागति लुभावनो ॥
कलभ करनि सम चरण पाथोज तल।
बावरा नमत नित प्रभु पद पावनो ॥

५९.

क्षीर प्याई मातु लाल अंक से उठाई निज।
लाई के थमाई दियो नंदजू की गोद में ॥
हिय सों लगाय पुलकाय भरी आँखिन सो।
श्याम को निहारत दुलारत विनोद में ॥
सुकृत समूह को साकार शिशु रूप पाई।
दम्पत्ति विभोर हैं प्रफुल्लित प्रमोद में ॥
मातु पितु गोद श्याम सूरति निहारति है।
बावरा मगन अति पूरित आमोद में ॥

६०.

लियो लाल गोद महामोद भरे नंदराय।
बलि बलि जात जानि देव को प्रसाद है॥
तीनि पन बीति गयो जीवन की रीति गयो।
जगत सो प्रीति मानी महा अवसाद है॥
परम कृपालु भयो ईश भरी गोद दयो।
पाई कै कन्हाई गयो परम विषाद है॥
पूरी भई आस ब्रज बावरे सुपास पायो।
धन्य भयो आज लहि जीवन को स्वाद है॥
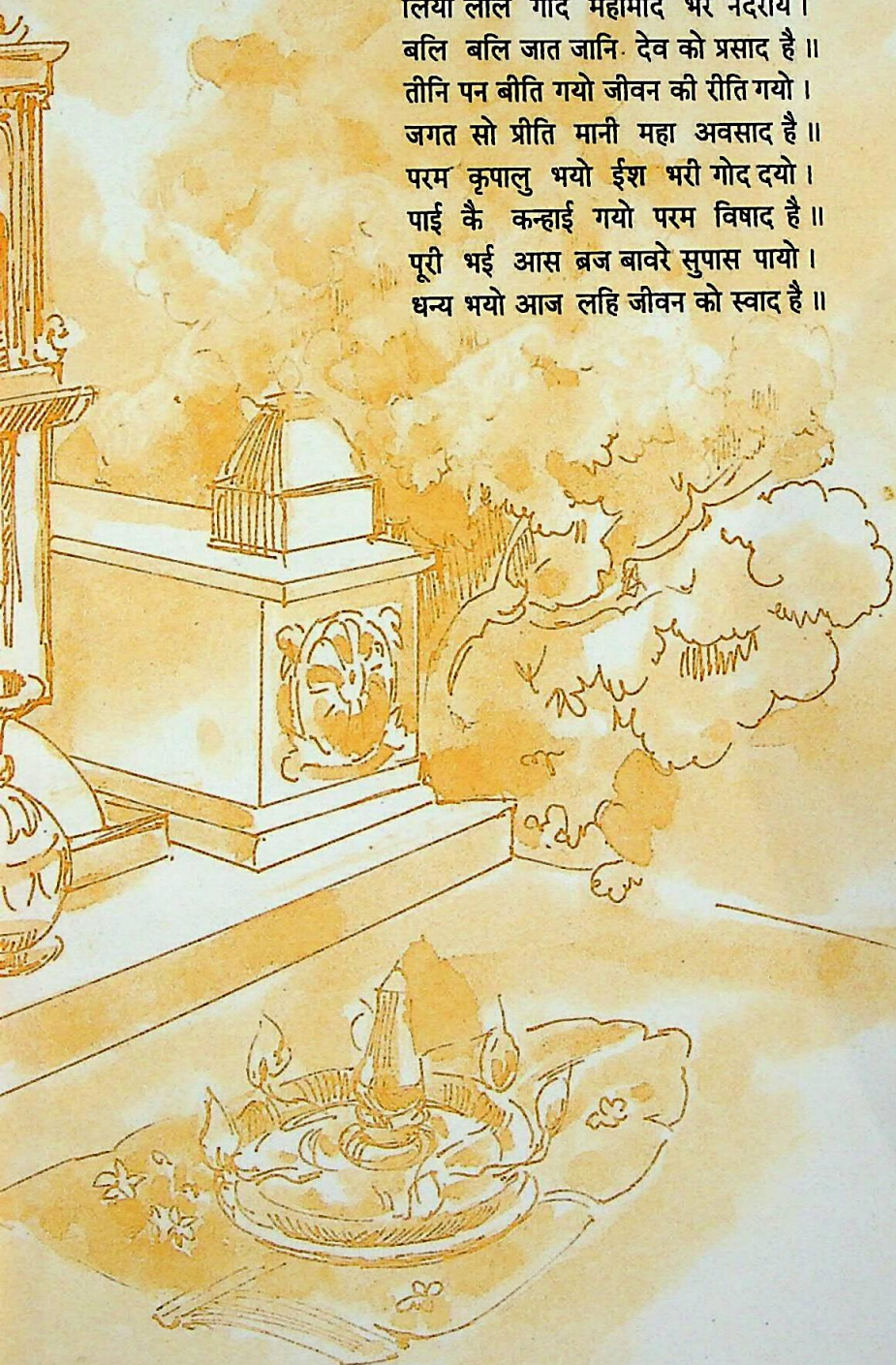
६१.

धन्य भाग नंद को कहत मुनि वृंद देखि ।
गोद लिए कृष्ण कृष्ण कृष्ण सुमिरत हैं ॥
अंक लिपटाइ के निहारत मयंक मुख ।
चूमत कपोल कर अधर धरत हैं ॥
पाइ प्राणवल्लभ बिसारी देह गेह सबै ।
पितर मनाई देव वन्दना करत हैं ॥
बावरे मल्हाई दुलराई लाई आँखिन सो ।
हिय सो लगाई उर आनंद भरत हैं ॥

६२.

गोप वृन्द आइकै जुहारि निज नायक को ।
चर्चा चलायो राज कर के भरन की ॥
सुनि नंदराय मुस्काइ कह्यो ग्वालन सों ।
भूलि गयो तात बात नहीं है डरन की ॥
आततायी कंस को प्रसार चहुँ ओर देखि ।
साहस सिरान्यो अनाचार को सहन की ॥
बावरे प्रतीति यही रीति सर्वेश्वर की ।
आगम दिखावै महि भार के हरन की ॥

६३.

घोर अत्याचार चहुँ ओर हाहाकार मच्यो।
कंस को आदेश खल शिशुन हनत हैं॥
धरम प्रतीति गई देवन सो प्रीति गई।
पाप को प्रताप कोऊ कछु न गनत हैं॥
बालक अबोध मरैं लोग त्राहि त्राहि करैं।
आरत की चीख नहीं कहिबो बनत हैं॥
जग रखवारे बाल रूप में पधारे आपु।
भार मही टारन को बावरे भनत हैं॥

६४.

गोपन प्रबोधि सोधि सुन्दर लगन आपु।
राज कर देन हेतु मथुरा चलन को॥
लाल की संभाल हेतु विविध उपाय करी।
जानत प्रताप नहीं दानव दलन को॥
साथ करदार बहु भाँति उपहार लिये।
चले ब्रजराज बंदि विघन हरण को॥
बावरे अधीर अति पीर लिये नंदराय।
आयो मधुपुरी उर चिंतन ललन को॥

५.

कंस की पठाई आई पूतना पिशाची धारि।
ग्वालिनी को वेश विष आंचल छिपाइ कै॥
सुन्दर स्वरूप लखि मोहति अनूप गति।
मन हरि लेत नेक नैन को चलाई कै॥
पैठि नंदगाँव ठाँव ठाँव अवलोकति है।
पूछि नंदधाम तहँ आई हरषाइ कै॥
बावरे थकित भई देखति यशोदा रही।
कहाँ तव लाल कहै मुख मुसकाइ कै॥

६६.

कोऊ नहीं जानत वह कौन है कहाँ से आई।
काह वाको काम काह नाम ठौर ठाम है॥
नाथ सर्वज्ञ ताहि जानि नैन मूँदि लियो।
चाहत करन कछु कौतुक ललाम है॥
पालने में सोवत निहारि मनमोहन को।
देखती ठगी सी रही भूलि निज काम है॥
बावरे सो धाई के उठाई उर लाई लई।
जानति न मूढ़ वाको काह परिणाम है॥

६७.

गोद में उठाई लाल डाटति यशुमति को
जानति हो पायो पूत उमर बिताई कै
ताते तोहि बोध नहीं शिशु को संभालिबे को
बालक सुलाई देत बिना पय पियाई कै
होइके अधीर अंब देखती ठगी सी रही
कहि नहिं पावै कछु ताहिं समुझाई कै
बावरे निहारि मातु आँचल सो ढाँपि रही
अशुभ विचारि परी भूमि चक्रिआई कै

६८.

पूतना की गोद प्रभु करत विनोद महा।
नैन मूँदि तासु गति देखिबो चहत हैं॥
कालकूट कुचन लगाई आई मारिबे को।
नाम अघहारी मेरो निगम कहत हैं॥
पय तो नहीं है पर पाप प्राण पाइ याको।
लोक वर दैहों जाहिं सुकृति लहत हैं॥
करुणानिधान की निहारि करुणा की रीति।
बावरे अनन्त कोटि पातक दहत हैं॥

६९.

देखत कवीश्वर विचारत बकी की गोद।
नैन मूँदि नाथ काह चिन्तन करत हैं।
जनम अनेकन को सुकृत संभारि तासु।
कालकूट प्यावन को पातक हरत हैं।
कीधौं इस पूतना को पूत करिबे को आपु।
अन्तर निहारि ताको आँचर धरत हैं।
मानी निज धाय कीधौं माय गति देइबे को।
बावरे अपार उर करुणा भरत हैं।

गोद लिये पूतना निहारति अनूप छवि।
मारिबे न योग्य लाल अन्तर कहती है॥
कंस को आदेश मानि आपनो करम जानि।
डारि मुखमाँहि कुच हतिबो चहती है॥
पकड़ि उरोज पय प्राण को हरत नाथ।
गइ अकुलाई उर वेदना दहती है॥
कहि नहीं जाय कछु जीवन बचाइबे को।
बावरे अधीर नहीं मारग लहति है॥

७१.
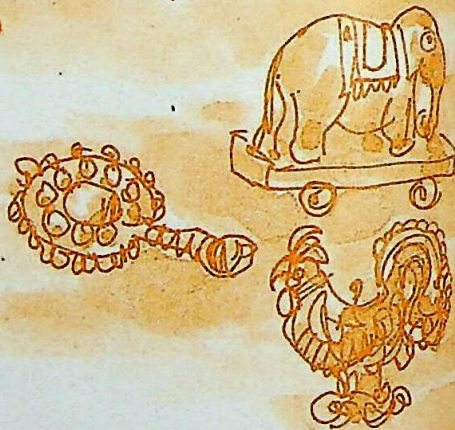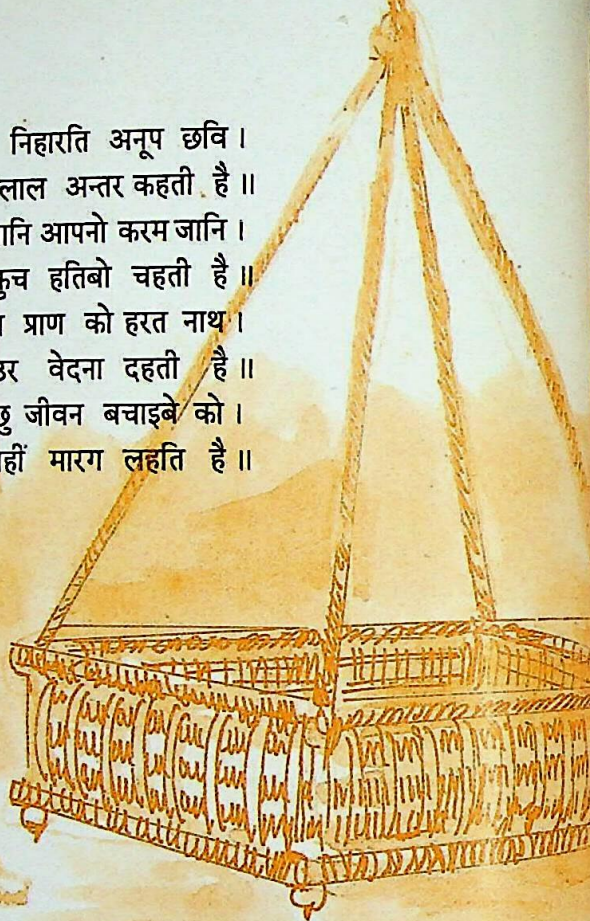
धाई नंदधाम से उठाइ मधुसूदन को।
डगर बगर लोग भागि गयो डरिकै॥
करति उपाय बहु आंचर छुड़ाइबे को।
छोड़त न श्याम प्राण पियत पकरि कै॥
बार बार चीखती कराहती पराति जाति।
परी भहराई ग्राम बाहर पसरि कै॥
बावरा विभोर करुणेश की कृपा निहारि।
दई गति ताहि प्रभु प्राण तासु हरि कै॥
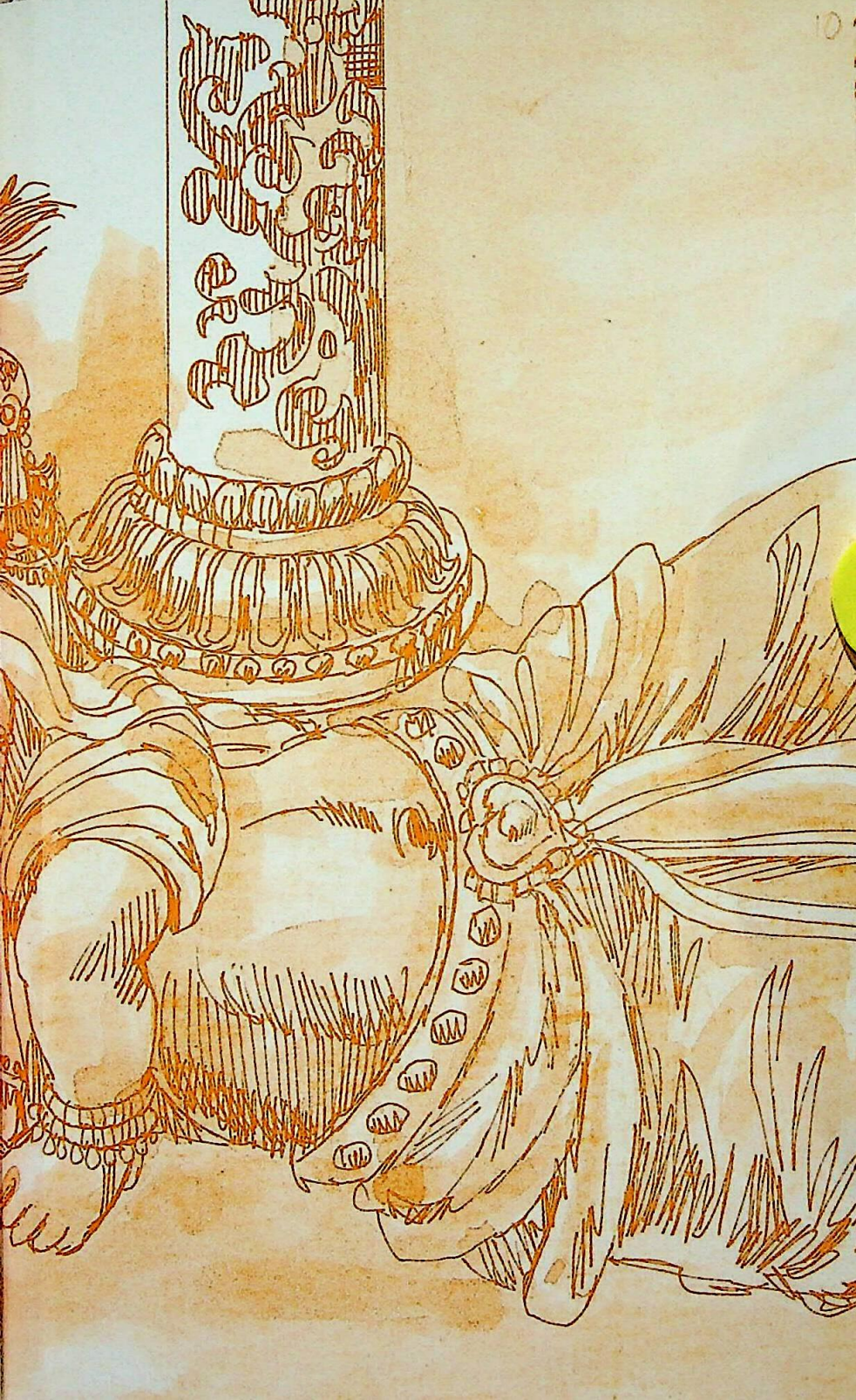
७२.

चेतना में आइ मातु लालन को ढूँढ़ति है।
बावरी भई सी कृष्ण कृष्ण को पुकारि कै॥
गोपी ग्वाल बाल वृद्ध आकुल अधीर होइ कै।
हेरत कन्हाई ठाँव ठाँव में निहारि कै॥
गोकुल के द्वार परी राक्षसी विशाल देखि।
कहें त्राहि त्राहि महा अशुभ विचारि कै॥
बावरे अघारि अघी नारि को स्वधाम देई।
प्रकरि उरोज तासु खेलैं किलकारि कै॥

७३.

अति विकराल है भयावनो विशाल तनु।
पूतना पिशाची पहिचानी लोग डरिगो॥
खेलत बिहारी तापै मारी किलकारी देखि।
भोरे ब्रजवासिन को अन्तर हहरि गो॥
गोप एक धाई तासु उर से उठाई श्याम।
लाई दियो यशुदा की गोद फिरि भरिगो॥
हिय सो लगाई लाल ईश को मनावती है।
बावरे प्रसाद जासु संकट निसरि गो॥

७४.

विपति महान् बीति गयो ब्रजवासिन को।
कुशल कन्हाई पाई मोद मुख छाईगो॥
श्याम को निहारि धीर धीरज उसासें भरैं।
मृतक शरीर मानो प्राण फिरि पाइगो॥
पूतना निपाति महा अशुभ निवारियो ईश।
लाल को निकारि काल गाल सो बचाइगो॥
पुलकि यशोदा लिए गोद प्राणवल्लभ को।
बावरे विलोकि देव मंगल मनाई गो॥

७५.

अंक में संभालि लाल माय निज धाम आय ।
विप्रन बुलायं दियो दान हिक भरिकै ॥
याचना करति ग्रह अशुभ निवारिबे की ।
पावति आशीष लेति आँचल में धरिकै ॥
लाल हित हेतु देव पितर मनावती है ।
पूजती पुरारि जप तप व्रत करि कै ॥
बावरे बहुरि नंदराय आयो मथुरा से ।
सुनत कहानी रह्यो अन्तर थहरि कै ॥

७६.

नंदजू के लाल की संभाल करी देवन ने ।
हर घर यही एक चर्चा चलत है ॥
पूतना सहांरि मेरो कान्ह को उबारि लियो ।
ईश के प्रसाद जग जीवत पलत है ॥
कोऊ कहै कंस की पठाई आई गोकुल में ।
मेरो व्रजराज ताको आँखिन खलत है ॥
करी है संभाल सोई करैगो संभाल व्रज ।
बावरे सुमरि हरि संकट टलत है ॥

७७.

जादिन से पूतना की छाया परी लालन पै ।
तादिन से दम्पति के सोच उर छाइगो ॥
कुटिल कुचालि क्रूर कंस की पठाई जानि ।
मानि असहाय आपु हिय थहराई गो ॥
ऐसो छली मायावी अनेक महाबली दैत्य ।
कौन कब जानै कहाँ किस रूप आइगो ॥
बावरे अधीरन को एक अवलम्ब नाथ ।
मारी किलकारी हँसी धीरज बंधाइगो ॥

७८.

कोऊ कहै नंद को कुमार देव अंश कोऊ।
आयो शिशु रूप व्रज मंगल करन को ॥
कोऊ कहै बालक अलौकिक बुझात मोहि।
अति सुख होत वाके परसे चरण को ॥
कोऊ कहै आपु सर्वेश्वर कन्हाई बनि।
लियो अवतार महि भार के हरन को ॥
बावरे मगन व्रजवासी नित रैन दिन।
चिन्तन करत जग तारन तरन को ॥

७९.

जसुमति नंद व्रजवासी नरनारी सबै।
श्याम हित हेतु सदा रहत सभीत है ॥
लाल मुख देखत सकल भय भागि जात।
तरणी प्रकाश जिमि नाशत निशीथ है ॥
भृकुटी निहारि जासु कांपत कराल काल।
नाम एक जासु मेटि देत भवभीति है ॥
सोई सर्वेश को संभालति रहति मातु।
बावरा वदत यह प्रीति की प्रतीति है ॥

८०.

कबहूँ उठाई हुलसाई हिय लाइ लेति।
कबहूँ लिटाई देति पालने में डारि कै ॥
नैनन के तारे रतनारे कजरारे श्याम।
पलक की भाँति सदा राखति संभारि कै ॥
कभौं लाल रुदन करत पय पान हेतु।
अंक में लगाइ कै पियावति दुलारि कै ॥
जग रखवारे को सुलाय मातु राखि रही।
बावरा थकित प्रेम पावन निहारि कै ॥

८१.

उबटि अह्नवाय के सवाँरति सजाय मातु।
अंग अंग लाल की लुनाई निरखति है॥
गाई गाई रूमि झूमि चूमति कपोलन को।
हिय हुलसाई पद पंकज गहति है॥
चकित निहारि छवि चरण सरोरुह को।
अंकित विविध शुभ रेखनि गनति है॥
मति थकि जाति गति देखिके यशोमति की।
बावरे निहारि नहीं उपमा लहति है॥

८२

कबहूँ उमंग में उठाई लाल पालने से।
आँखिन लगाई निज सीस पै बिठावती॥
कबहूँ उछालती दुलारती मल्हारती है।
हिय की कहानी कही श्याम को सुनावती॥
कान्हरा हमारो रखवारो ब्रजमंडल को।
प्राण को सहारो कहि कहि हुलसावती॥
बावरे बिलोकि मुख कान्ह को क्षुधित जानि।
ममता सकेलि उर अमिअ पियावती॥

८३.

अंक में उठाइ पय प्याइ पौढ़ाई अम्ब।
गाई गाई लोरि प्रिय श्याम को सुनावती॥
आऊ री निदरिया सेजरिया सजाइ नेकु।
लाल को सुलाइ देउ कही मल्हरावती॥
परम विनोदी प्रभु पलक झपाई लेत।
जननी विलोकि ताहि अति सचु पावती॥
बावरे तुरीय नाथ सोवत खिलौने साथ।
श्रुति नेति नेति जाकी महिमा बतावती॥

८४.

मुनि मनहारी चारु चंदन हिंडोला बन्यो ।
रतन जड़ायो बहु भाँतिन सजाइ कै ॥
मोतिन की झालरि झलकि चहुँ ओर रही ।
विमल बिछौना तापै राख्यो बिछाई कै ॥
सोवत कन्हाई अद्‌भुत छवि छाय रही ।
लाल को निहारै मातु अति सचु पाइकै ॥
बावरे प्रतीति देख्यो ईशन को ईश हेतु ।
माँगती आशीश बहु देवन मानइ कै ॥

८५.
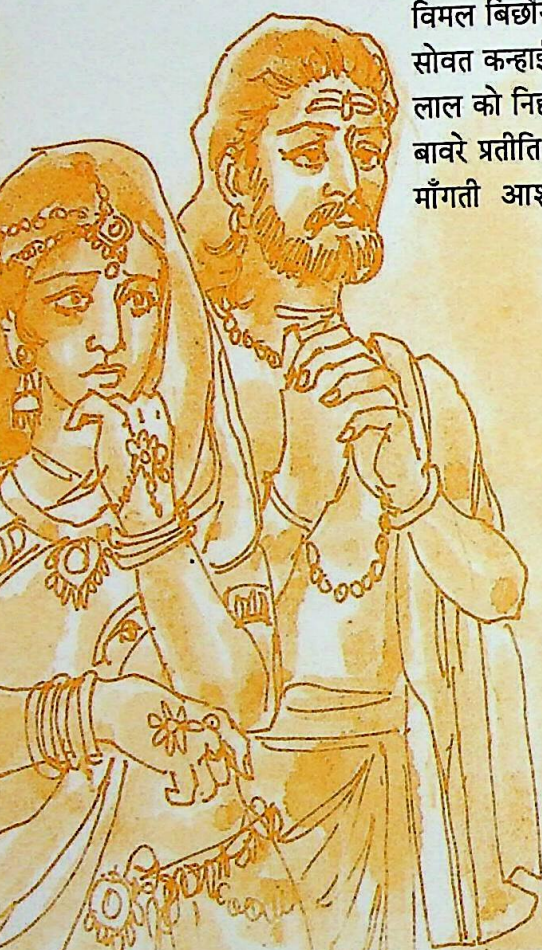
पालने में लाल की ललित सुघराई देखि ।
मूँदि आँखि आँचल छिपाइ लेति आपु को ॥
राई लोन वारती निवारति अशुभ दृष्टि ।
सहमि सकात लखि लालन की झाँप को ॥
हिय सकुचाती निज नजरी न लागि जाय ।
देखति छिपाय सुत कौतुक कलाप को ॥
मातु अति भोरी करै चोरी निज नैनन सो ।
बावरा बखानै किमि प्रेम के प्रताप को ॥

८६.

ब्रज के निवासी बाल वृद्ध नर नारी जेते।
कल न लहत बिनु देखे नंदलाल को॥
मानो गोप गोपिन को प्राण घनीभूत होइके।
राजै नंदधाम धरि रूप नौनिहाल को॥
तन मन वारैं तृण तोरि कै निहारैं शोभा।
मंगल मनावैं उर ध्याइ चंद्र भाल को॥
देव महादानी तव महिमा बखानै वेद।
बावरे दयाल होउ रक्षक गोपाल को॥

८७.

जा सुख की लालसा ले जतन अनेक साधि ।
पल भर पाइबे को जोगी जन तरसैं ॥
ताहि सुख सिंधु में मगन ब्रजवासी सदा ।
नैनन सो पाइ अवगाहि हिय हरषैं ॥
अगुण अरूप ब्रह्म अलख अगोचर जो ।
देव मुनि वृन्द जाको ध्यानहूँ न परसैं ॥
सोई शिशु रूप आई सोवत हिडोंले माँहि ।
बावरे विलोकि के सनेह उर सरसैं ॥

८८.

लाल-को सुलाइ मातु पालने झुलाइ रही ।
गाय रही लोरी महा मोद उर भरिकै ॥
देखि मनमोहन की मोहिनी मधुर छवि ।
नजरि बचाय रही जात है सिहरि कै ॥
आतुर निहारि अंग अंग की अपार शोभा ।
डारि पट देत दुष्ट आँखिन से डरि कै ॥
बावरे यशोमति को सुकृत बखाने कौन ।
जासु यश रह्यो तिहुँ लोकन पसरि कै ॥

८९.

पल पल लाल की निहारति अपारआभा ।
छिन छिन प्राण न्योछावरि करति है ॥
मानहुँ मयंक निज चाँदनी बिखेरी रह्यो ।
आँखिन सकेली मातु उर में धरति है ॥
नैनन उनींदे मुख कंज की अनूप छवि ।
श्याम अंग अंगनि सों सुषमा झरति है ॥
बावरा बखानैं शिशु रूप सर्वेश्वर को ।
प्रभुता बिचारि कवि मति हहरति है ॥

९०.

औचक उचटि गई नींद मनमोहन की ।
जागि पय पान लागि रुदन करत हैं ॥
अंब हरषाइ निज अंक में उठाइ लियो ।
आँचल ओढ़ायो लखि देव सिहरत हैं ॥
निगम बतावै नाथ जीव सचराचर को ।
पलक उठाइ नेकु पोषण करत हैं ॥
बावरा भनत भगवान् शिशु रूप सोई ।
मातु क्षीर पाइ महामोद में भरत हैं ॥

९१.

आगम अगम नेति निगम बखानै जाहि ।
ध्यान में न आवत यतिन्द्र मुनि धीर को ॥
नाम को प्रताप जासु सन्तन पुकारि कह्यो ।
बारेक उचारत हरत भवभीर को ॥
पलक उघारे ते प्रभव भव होत जाके ।
सोई सर्वेश बन्यो बालक अहीर को ॥
बावरे विलोकु ताहि अंक में लिटाय अंब ।
आँचल औढ़ाई के पियावति है क्षीर को ॥

९२.

मातु पय प्याइ पौढ़ाई पालने में लाल ।
आपु गृह काज कछु करिबो चहत है ॥
छगन मगन कल कूँजत हिंडोले माँहि ।
अंब अवलोकि उर आनन्द लहत है ॥
दोउ कर कंजनि पकरि पद पंकज को ।
मेलि मुख कंज मांहि अंगुठा गहत है ॥
देखिके अनूप छवि बावरा बखानै किमि ।
वेद नित नेति जाकी महिमा कहत है ॥

९३.

जासु पद पंकज को पावन पराग पाइ।
मानत विरंचि निज जीवन सफल भो॥
जासु तेज अंश से आभासित अनन्त भानु।
जासु बल पाइ यह वसुधा अचल भो॥
भुवन अनन्त को अधीश ईश ईशन को।
यशुदा की गोद तांहि सुन्दर सुथल भो॥
मातु पय पान किये खेलत खिलौना लिये।
बावरा निहारि कै निहाल पल पल भो॥

९४.

छिन छिन लाल को निहारति सम्हारति है।
गृह काज कोऊ नंदरानी न करति है॥
देखि के मयंक मुख अंक लिपटाइ लेति।
चूमति कपोल शोभा उर में भरति है॥
कान्हरा कन्हैया मेरो प्राणिन को प्राणधन।
कहि मल्हराई दुलराई सिहरति है॥
मानहुँ शृंगार शिशु गोद वात्सल्य लियो।
बावरे सु बाँकी झाँकी हिय को हरति है॥

९५.

ललित खिलौना लाल लालन लुभाइबे को।
मातु लटकाइ राख्यो पालने लगाई कै॥
लखि किलकाई लहराई पद पंकज को।
गहन चहत कर कंजन उठाइ कै॥
दसन विहीन मुख बसन विहीन वपु।
मानो शिशु रूप शशि पुहुमि पै आइकै॥
खेलत हिडोंले बीच बावरे सुधा सो सींचि।
नैनन चकोरन को राख्यो भरमाई कै॥

९६.

पालने में पौढ़ि प्रभु खेलत खिलौना लिये।
चंचल चरण चालि कूँजत हसत हैं॥
कमल कलिन सम कोमल चरण चारू।
मुनि मन भृंग जामे मुदित बसत हैं॥
सोई पद पंकज सो शकट विध्वंस करि।
असुर उद्धारयो छुइ पातक नसत हैं॥
रुदन् करत धाय माय पय प्यावति है।
बावरे मुदित अंब अंक में लसत हैं॥
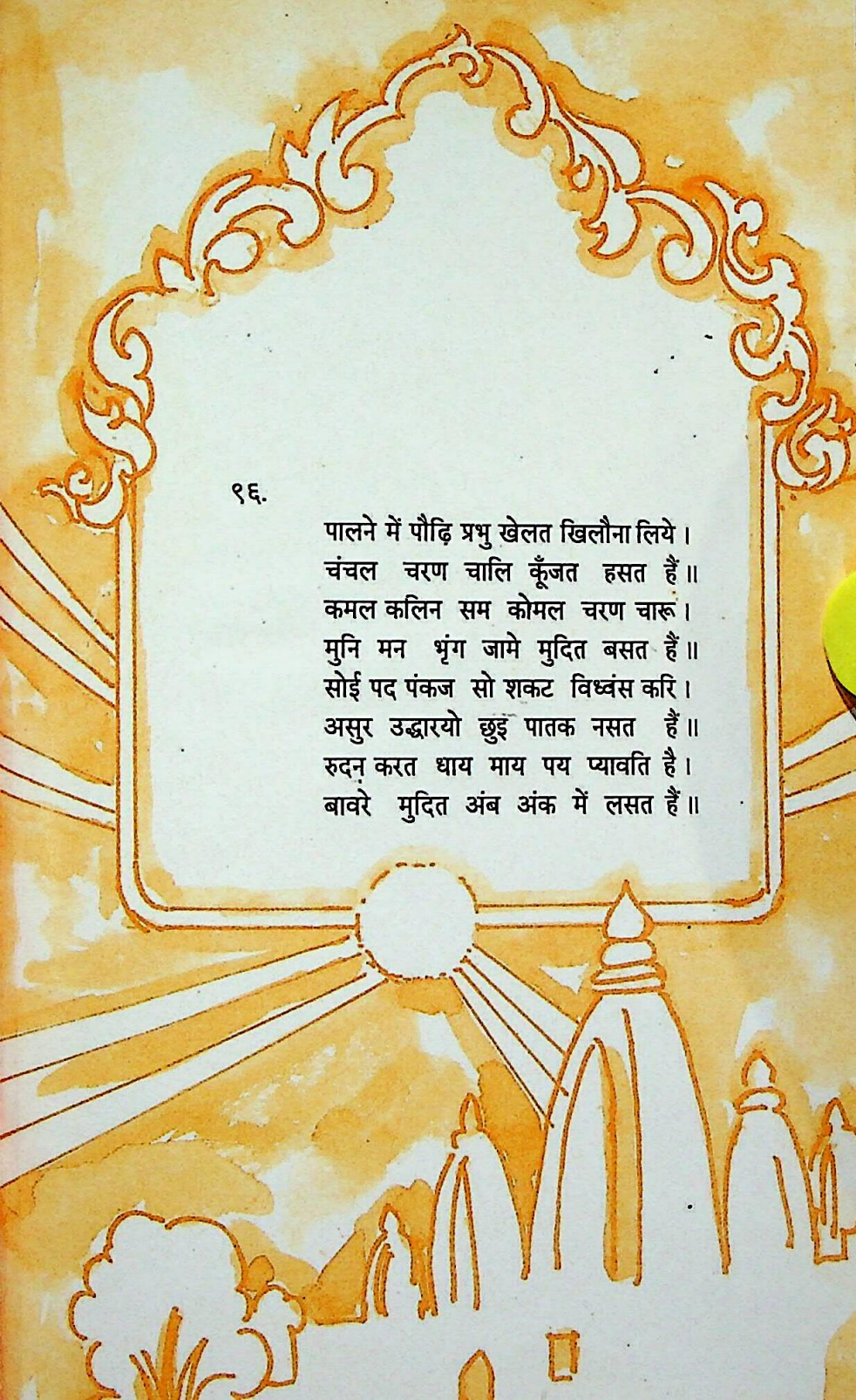
९७.

आनंद विभोर अंब अंक में उठाइ लियो।
चुटकी बजाई गाई बलि बलि जात है॥
कौतुकी कृपालु निज भार को बढ़ाइ दियो।
जननी चकित मानि महा उत्पात है॥
सकी न सम्भारि श्याम धरा पै बिठाई दियो।
पूजि देव याचति ललन कुशलात है॥
बावरे आवर्त्त रूप धारि तृणावर्त आयो।
प्रभु को उठाइ नभ लिये इठलात है॥

९८.

लाल को न पाइ अंब आकुल अधीर अति।
तलफत मीन जिमि धरनि पे आइ कै॥
ब्रज के निवासी नरनारी असहाय होय कै।
क्रन्दन करत नंद नंदन गंवाइ कै॥
क्रीड़त कन्हाई नभ असुर के अंक मांहि।
रोक्यो गति तासु निज भार को बढ़ाइ कै॥
बावरे दबाय कंठ प्राण हरि लीन्हो हरि।
मृत यातुधान पर्‍यो भूमि भहराइ कै॥
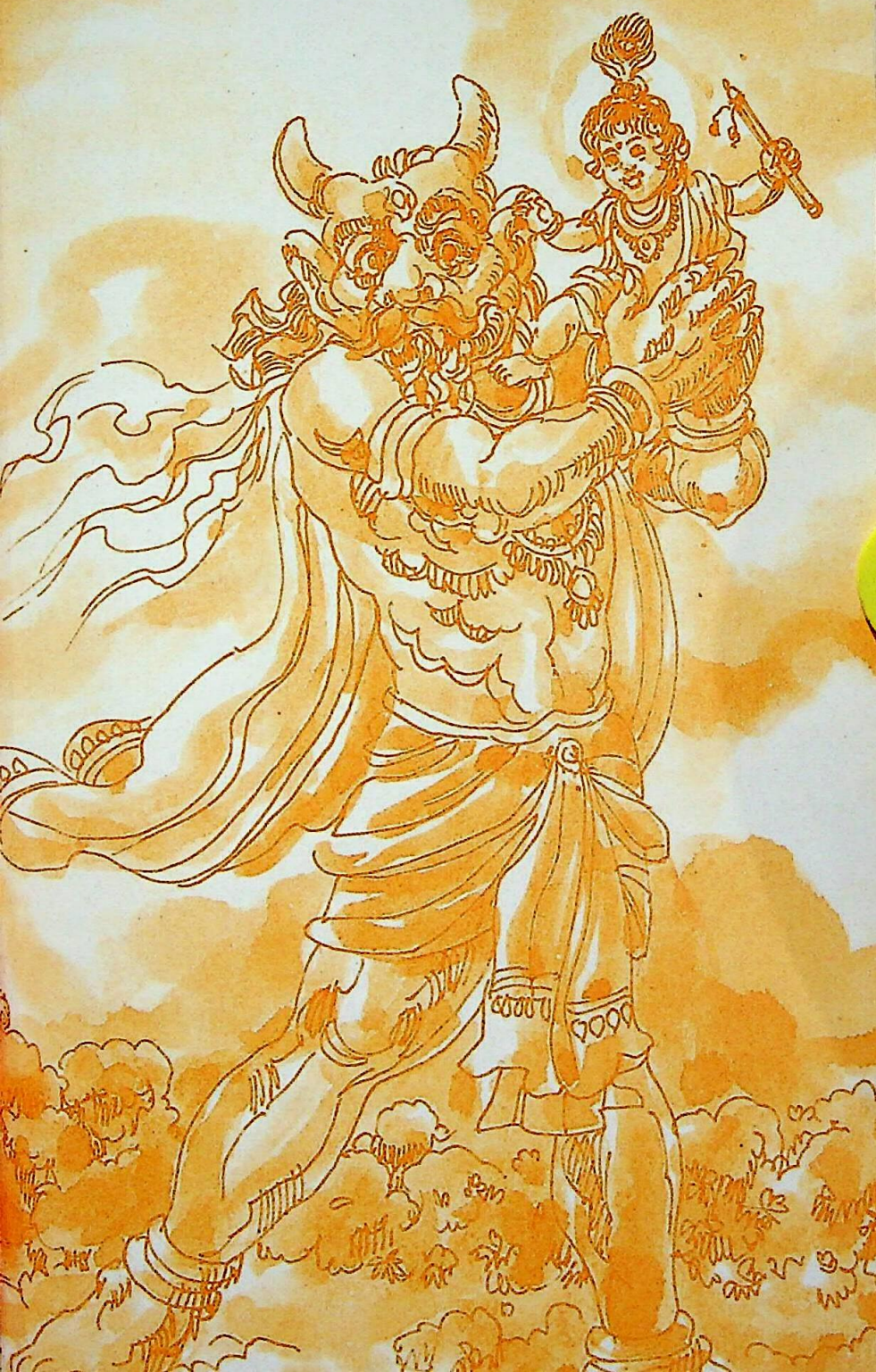
९९.

असुर को अंग खंड खंड होय धरा पै आई।
पर्‌यो बिखराई ताहि देखि लोग डरिगो॥
लटकि कन्हाई तासु कंठ गहि क्रीड़त हैं।
ताकि ब्रजवासिन को अन्तर थहरिगो॥
धाइ के उठाई लाल अंब हिय लाइ लियो।
तलफत मीन मानो बारि बीच परिगो॥
विप्रन बुलाई देई दान देव पूजति है।
बावरे प्रसाद जासु महाभय टरिगौ॥

१००

अहो धन्यभाग्य नंद सुकृत जसोमति को।
कहै ब्रजवासी सबै हिय हरषाइ कै॥
पुण्य को प्रताप जासु लाल को बचाइ लियो।
असुर संहारयो देव दया दरशाइ कै॥
बार बार गोद लै दुलारै मुद मोद भरे।
मंगल आशीष देहि स्नेह सरसाइ कै॥
करुणानिधान करैं कौतुक अनेक भाँति।
बावरे से दासन पै कृपा बरसाइ कै॥

१०१.

एक दिन मातु पय पयावत चकित होत।
तृप्ति न लहत श्याम पीवत ही जात है॥
जननी संशक ह्वै पयोधर हटाइ लियो।
अम्ब तनु ताकि कल कूंजि मुसकात है॥
बावरे यशोमति बिलोकति थकित नैन।
भुवन अनन्त मुख माँहि दरसात है॥
नयन मूँदि लाल को उठाई अंक लाई लेती।
अमित अधीर मानि दैव उत्पात है॥

१०२.

आवत न कल पल एक ब्रजवासिन को ।
विविध बहानो लाइ नंदधाम आवहीं ॥
श्याम को निहारि चुचुकारी के परसि अंग ।
आँखिन लगाई निज अति सुख पावहीं ॥
लाइ मोरी आयु राखु कुशल कन्हाई देव ।
कहैं कर जोरि दोऊ विधि को मनावहीं ॥
बावरा बखानैं अहोभाग्य गोप गोपिन को ।
करैं प्राणदान प्राणनाथ को रिझावहीं ॥

१०३.

कुंचित कलित केश मोतिन सजायो शीश ।
तिलक ललाट जनु दामिनी लसति है ॥
लाल लाल गालन पै लटकई लटूरी लाल ।
मानहुँ बनाइ नीड़ सुषमा बसति है ॥
सुन्दर भृकुटि बंक लोचन विशाल लाल ।
कीर तुंड नासिका लुनाई सरसति है ॥
प्रभु को मुखारविन्द बावरा बखानै किमि ।
अंग अंग छाइ शोभा आपु बिलसति है ॥

१०४.

कंबु कंठ कलित कठूलो उर आयत पै ।
मोतिन को माल मणि भूषण बिराजहीं ॥
भुजन केयूर कर कंगन करज चारू ।
त्रिबली गंभीर चक्र मध्य भाग भ्राजहीं ॥
पीत रंग काछनी पै किंकनी लसति कटि ।
खेलत खिलौने संग मंद मंद बाजहीं ॥
बावरे उरुनि घुटरुनि पद कंजनि को ।
वरणि न जात शोभा कवि मति लाजहीं ॥

१०५.

चिन्तन करत नित प्रभु पद पंकज को।
पावन पदज तापै नख छवि छाजहीं॥
मानहु मयंक दश लघुतम रूप धारि।
श्यामल सरोज की पंखुड़िअन पै राजहीं॥
चंचल चरण चालि क्रीड़त आमोद मांहि।
लालन की ललित लुनाई अति भ्राजहीं॥
रुनुक झुनुक धुनि पैजनि करति चारु।
बावरे निहारि शोभा काम कोटि लाजहीं॥

१०६.

लाल जलजाभ सम सुन्दर सुतल आभा।
मुनि मन भृंग जापै रहत लुभाइ कै॥
अंकुश कुलिश धनु बाण ध्वज पंकज सो।
मंगल सुरेखन सो अंकित बनाइ कै॥
परसि पराग जासु जनम अनेकन को।
पातक पराई जात कहै श्रुति गाइ कै॥
प्रभु पद कंजनि की सुषमा बखानै किमि।
बावरा मगन उर अन्तर में ध्याइ कै॥

१०७.

नीलमणि आभा नील नीरज सो कोमल है।
नीरधर सरिस सरस तनु श्याम है॥
अरुण अधर कर तल पगतल चारु।
करज पदज नख शोभित ललाम है॥
रतन जड़ित हेम मंडित सुमोतिन सो।
अंग अंग भूषण विभूषित सुठाँव है॥
पीतपट धारि प्रभु पालने में राजत हैं।
बावरे से दासन को लोचनाभिराम है॥

१०८.

चारु कर कंज पद कंजनि पसारि प्रभु।
उदर आधार पर्यंक पै बिराजहीं॥
मातु मल्हराई कै बुलावति है लालन को।
उचकि निहारि किलकाई अति भ्राजहीं॥
कमल नयन सुचि सोहत मयंक मुख।
भूषित आभूषण सो कंठ उर राजहीं॥
बारेक विलोकि चित्त चाहिबो चहत नित्य।
बावरे न पाई गति मन मति लाजहीं॥

१०९.

मातु महामोद में निहारि प्राणवल्लभ को।
कौतुक बुलाई नंदराय को दिखावती॥
देखऊ गोपाल लाल आपु उठि बैठि आज।
खेलत खिलौना लिए कही पुलकावती॥
अगम अगोचर निरीह निराकार ब्रह्म।
श्रुति नित नेति जाकि महिमा बतावती॥
दम्पति प्रमोद हेतु करत विनोद सोइ।
बावरे बिलोकि मति गति नहीं पावती॥

११०.

भोरहिं सो आजु लाल रोदन करन लागे।
पीवत न छीर नेकु धीर न धरत हैं॥
आकुल अमित अंब पूछति जेठरनि सो।
करति उपाय बहु काज न सरत है॥
कोऊ कहै काहु को कुदृष्टि को प्रभाव यह।
कोऊ कहै छाया दुष्ट समुझि परत है॥
गोद में बिठाए मातु लाल को झरावति है।
बावरा विलोकि उर आनंद भरत है॥

१११.

विविध उपाय करि हारी मातु लालन को ।
आवति न नींद पय पान न करत हैं ॥
कान्ह गति देखि अति चिन्तित है नंदराय ।
व्यथित यशोमति न ढाढस धरत हैं ॥
प्राणधन पीड़ित विचारि व्रजवासिन को ।
आवत न धीर उर आह सो भरत हैं ॥
चरित विचित्र देखि बावरा बखानै किमि ।
कौतुक करत नाथ हिय को हरत हैं ॥

११२.

मातु है अधीर नहीं जानति है पीर कहाँ ।
कौन हेतु लाल थिरताई न लहत है ॥
रहै पर्यंक में न अंक में न पालने में ।
कहत न आवै कछु कहिबो चहत है ॥
पूजि गृह देवन मनाइ देत दान बहु ।
करत उपाय सोई जौन जो कहत है ॥
बावरा थकित मति दम्पति दशा निहारि ।
बूढ़त ज्यों बारि धाई तृण को गहत है ॥

११३.

मातु पितु व्याकुल दुखित ब्रजवासी सबै ।
समुझि न आवत उपाय काह कीजिये ॥
कोऊ कह्यो परम प्रतापी अवधूत एक ।
आयो आज गोकुल दिखाई ताहि दीजिए ॥
नीको यह सम्मति विचारि नंदराय कही ।
पूजि सन्मानि ताहि बोलि यहाँ लीजिए ॥
बावरे सो ग्वाल धाई आई कै यतीश्वर पै ।
विनय सुनाई कहै लाल पै पसीजिए ॥

११४.

लालन को कालहिं सो कल न परत नेक।
रोवत है सोवत न पीबत न छीर को ॥
यतन अनेक साधि हारिगो कृपानिधान।
अमित अबोध न बताई सके पीर को ॥
आप सर्वज्ञ हैं योगीश्वर महान् देव।
कृपादृष्टि एक अवलम्ब है अधीर को ॥
बावरे अबोध नहीं जानते महेश्वर को।
वेदना सुनावते बहाइ दृग नीर को ॥

११५.

भक्त हित हेतु सर्वेश्वर प्रकट होइ कै।
धारि शिशु रूप कल कौतुक करत हैं ॥
अखिल आनंद घनीभूत घनश्याम रूप।
परम विरागिन के चित्त को हरत हैं ॥
सोई छवि देखिबे की लालसा हिय में लिये।
आपु उमानाथ ब्रज मांहि बिचरत हैं ॥
बावरे महेश्वर यतीश्वर के रूप माँहि।
भोरे गोप गोपिन पै अवढर ढरत हैं ॥

११६.

शीश जटाजूट हेमकूट ज्यों सुशोभित है।
भाल चंद्रभाल को त्रिपुंड अति साजहीं।
भृकुटि कमान ज्यों विशाल लाल लोचन हैं।
चारु श्रुति कुंडल मुखारविंद भ्राजहीं ॥
नीलकंठ भूषण रुचिर अक्षमाल अंग।
मृगपति छाल औ विभूति अंग छाजहीं ॥
बावरा निहाल भो निहारि पद कंजनि को।
देखि गौरांग को अनंग कोटि लाजहीं ॥

११७.

भूषण रहित तनु पूषण सरिस आभा ।
भक्त हिय दूषण को हरि लेत छन में ॥
कर में त्रिशूल लिये डमरू निनाद करैं ।
अलख जगावैं जनु नाद होत घन में ॥
परम अनूप रूप देखि कै यतीश्वर को ।
उमड़यो उमंग ब्रजवासिन के मन में ॥
पूजि पद पंकज विनय बहु भांति करी ।
बावरे लिवाय चल्यो नंद के भवन में ॥

धाइ नंदराय आइ द्वार पै अरघ देई।
पूजे पदकंज निज भाग्य को सराहि कै॥
तेजपुंज रूप को निहारत चकित होइ कै।
प्रगट्यो तरनि मानो धरनी पै आइ कै॥
बार बार बंदना करत परि पायन में।
देव हो दयालु कहैं बिनती सुनाय कै॥
बावरे की आपदा निवारी देऊ दीनबन्धु।
लाल दुख जाइहिं आशीष तव पाइ कै॥

११९.

भोरे ब्रजवासिन के भाव से विभोर होइ कै ।
देखि वात्सल्य को प्रभाव हिय हरषे ॥
धीरज बँधाई कह्यो लाल को दिखाउ नेक ।
संकट हरैंगे सब शीश कर परसे ॥
सुनत सभीत मातु बिनती सुनाइ कह्यो ।
कान्ह डरि जाये मोर योगी तव डर से ॥
बावरे अजान नहीं जानति यतीश्वर को ।
हरि को छुपाय रही आंचल में हर से ॥

१२०.

धन्य धन्य नंद धन्य भाग्य है यशोमति के ।
जासु गोद मांहि ब्रह्म बालक स्वरूप है ॥
जाकि एक झाँकि हेतु लालसा सजोये उर ।
याचना करत द्वारे ईशन को भूप है ॥
देववृंद नाक से निहारत थकित होइ कै ।
बरणी न जाय शोभा अद्भुत अनूप है ॥
बावरे हरीहर को कौतुक बखानै कौन ।
एक मातु अंक एक ठाढो यति रूप है ॥

१२१.

वात्सल्य भाव प्रेमभक्ति को प्रभाव अंब।
अंक में छुपाय राख्यो त्रिभुवन ईश को॥
देखि कै योगीश्वर पुलकि मुसकाई कह्यो।
आधि व्याधि मेटिहौं परसि कर शीश को॥
डारु मेरी गोद में प्रमोद सदा पाइहैं लाल।
अमर बनाऊँ देई मंगल आशीष को॥
तूँ है महतारी हितकारी हौहूँ लालन को।
बावरा कहत साखी राखि जगदीश को॥

१२२.

परम गंभीर पीर हारणि सुधा समान।
वाणी अवधूत की लुभायो मातु मन को॥
हिय हुलसाइ नेक आंचल उठाइ लियो।
प्रगट्यो प्रभाकर ज्यों चीरि आवरण को॥
देखि कै यतीश्वर अपार सुकुमार शोभा।
रोकि नहीं पावते प्रवाहित दृगन को॥
बावरे विलोकि उर अन्तर मचलि आयो।
अंक लिपटाइबे को चाव प्राणधन को॥

१२३.

शीश कर परसि यतीश्वर आशीष देई ।
सुषमा निहारते अपार अंग अंग की ॥
नयनाभिराम छविधाम घनश्याम रूप ।
बरनि न जाय शोभा अमित अनंग की ॥
सतचिदानंद ब्रह्म बालक स्वरूप सोहैं ।
महिमा बखानैं कौन अंब के उछंग की ॥
बावरे विलोकत महेश्वर मगन होइ कै ।
कही नहीं जाइ गाथा पावन प्रसंग की ॥

१२४.

पाइ के परस करि दरश यतीश्वर कै ।
रुदन बिहाइ लाल हसैं किलकाइ कै ॥
विहँसि योगीश्वर बढ़ायो कर कंज दोऊ ।
उछलि बिराजै प्रभु अंक महुँ आइकै ॥
कौतुक निहारि कै मगन सुरसिद्ध मुनि ।
बरसैं प्रसून नभ दुंदुभी बजाई कै ॥
देखि सर्वेश्वर महेश्वर की गोद मांहि ।
बावरा विभोर फल जीवन को पाइ कै ॥

१२५.

धन्य ब्रजधाम धन्य भाग्य ब्रजवासिन के ।
परम अनूप दृश्य देखत अभूत हैं ॥
परब्रह्म युगल सरूप में प्रगटि आयो ।
एक नंदलाल दूजो बन्यो अवधूत हैं ॥
हरि शिशु रूप में विराजैं हर अंक मांहि ।
कौतुक विलोकि देव भाव अभिभूत हैं ॥
हिय स्रों लगाइ परमेश सर्वेश्वर को ।
बावरा बखाने किमि आनंद प्रभूत हैं ॥

१२६.

भवभय मोचन त्रिलोचन की गोद माँहि ।
क्रीड़त उछालि अंग हंसि किलकावहीं ॥
मातु पितु गोपी ग्वाल चितवत चकित होइकै ।
बंदि अवधूत पद पंकज मनावहीं ॥
कृपा बरसाइ देव आधि व्याधि दूरि कियो ।
कहऊ उपाय जाते लाल सुख पावहीं ॥
बावरे निरखि कर कंज पद कंजनि को ।
कान्ह को भविष्य कहि ताहि समुझावहीं ॥

१२७.

जग प्रतिपालक है नंद यशुदा को लाल ।
पावन प्रकाश याको लोक तिहुँ छाइ है ॥
असुर संहारि सुर थापि सुर लोकन में ।
टारि महि भार पाप ताप को मिटाइ है ॥
जग विस्तारि हैं धरम को परम भाव ।
सुयश अपार युग युग कवि गाइ है ॥
दिव्य प्रेम रस की बहाइहैं पुनीत धारा ।
बावरे से किंकर पै कृपा बरसाइ है ॥

१२८.

महिमा महान तव लाल को बखानौं किमि ।
गुण के निधान जग कारण करण हैं ॥
संत सुर रंजन सुरारि मद गंजन हैं ।
सुमिरे सकृत शोक संकट हरन हैं ॥
दीन जन बंधु सुख सिंधु करुणानिधान ।
ईशन दिगीशन सों बंदित चरण हैं ॥
भक्त हित हेतु बपु धारि आयो भूतल पै ।
बावरे अनाथ नाथ दारिद दरन हैं ॥

१२९.

प्रभुता सुनाई समुझाई गोप गोपिन को।
धीरज बंधाइ देइ मंगल आशीष को॥
गोद में उठाइ सिर नाइ भरि आँखिन सो।
बार बार सुषमा निहारि जगदीश को॥
अति सचु पाइ मातु गोद में थमाई लाल।
उर भरि आयो लखि लीला सुर ईश को॥
अलख जगाइ अवधूत निज धाम आयो।
बावरा बखानैं किमि कौतुक गिरीश को॥

१३०.

कुशल कन्हाई अवधूत को आशीष पाई।
मातु मन मोद नंद आनंद मनावहीं॥
खेलत हँसत किलकत पय पान करि।
देखि ब्रजवासी सबै अति सुख पावहीं॥
दिन दिन बाढ़त हैं चंद्र की कला समान।
करत चरित्र चारु संत मन भावहीं॥
असुर अनेक बालकेलि में निपात कियो।
बावरे मुनीश नित नाथ गुण गावहीं॥

१३१.

प्रभुता बिसारि पितु मातु को प्रमोद देत।
करुणानिधान बहु कौतुक करत हैं॥
उठिबो चहत गिरि जात उठि पावत ना।
ठाढ़ होन होत अंब अंगुरि धरत हैं॥
चलत बकैंया सिंह सावक ठवनि श्याम।
दम्पति विलोकि उर आनंद भरत हैं॥
प्याइबे को क्षीर माँ बुलावति है लालन को।
बावरे चितइ चारु चित्त को हरत हैं॥

१३२.

भक्त हित हेतु भगवान अवतार लेइ कै।
चरित करत चारु लोचनाभिराम हैं॥
श्यामल स्वरूप पीत अम्बर लसत तापै।
भूषण विविध अंग शोभा सुखधाम हैं॥
अंगुलि पकड़ि अंब चलिबो सिखावति है।
गिरि गिरि जात करैं कौतुक ललाम हैं॥
बावरे सो बांकी झांकी उर में बसति जाकै।
सोइ जन पावत परम विश्राम हैं॥

१३३.

भुवन अनन्त के बिहारी बालरूप धारी।
विविध चरित्र करि चित्त को चुरावहीं॥
करत विहार नंद बाबा के अजिर माहीं।
चलत घुटुरुवनि सो अति सुख पावहीं॥
मातु हरषाइ नवनीत लै बुलावति है।
देखि किलकाइ धाइ अंब पहिं आवहीं॥
दोऊ कर माखन उठाइ मुख लाइ लेत।
बावरा निहारि छवि बलि बलि जावहीं॥

पालने से आजु लाल आपुहि उतरि आयो।
पाटी को पकरि ठाढ़ो कूंजि किलकात है॥
अम्ब अवलोकि अवगाहि सुख सिन्धु मांहि।
धाइ लिपटाइ अंग बलि बलि जात है॥
दोऊ कर कंज गहि चलिबो सिखावति है।
धरत कन्हाई डग गिरि उठि जात है॥
बावरा बिलोकत विनोद प्राणवल्लभ को।
देखिबो चहत नहिं देखत अघात है॥

१३५.

कबहुँ किलकि उठि चलिबो चहत श्याम ।
धरत धरा पै पद पंकज सुहावनो ॥
देखि महतारी करतारी को बजाइ गाइ ।
अंगुरि धराई चलि चाहति चलावनो ॥
रुनक झुनक पग पैंजनि करति चारु ।
किंकनि निनाद कल कटि मन भावनो ॥
वसुधा विभोर प्रभु पायन परस पाइ ।
बावरा निहाल भो निहारि छवि पावनो ॥

१३६.

करत विनोद प्रभु वसुधा की गोद मांहि ।
लेटि लपटाइ लेत धूलि अंग अंग में ॥
किलकि पसारी बाँह चाहत गहन काग ।
जानु पाणि धावत बिहंग संग संग में ॥
मातु पयपान को बुलावति हैं अंक मांहि ।
दूरि भाजि जात बाल केलि के तरंग में ॥
धन्य भाग्य धरा को सराहि कहै देववृन्द ।
ब्रह्म बन्यो बालक विराजत उछंग में ॥

१३७.

चंचल चपल चित्तचोर यशुदा के लाल।
भोरे ब्रजबासिन्ह को हिय हरि लेत हैं॥
खेलत विहंग संग धावत घुटुरुअनि।
हंसि किलकाइ अति मातु सुख देत हैं॥
कर नवनीत लै बुलावत है काग आऊ।
आवत निकट जानि भाजत निकेत हैं॥
अंब अवलोकति है कौतुक कपाट ओट।
बावरे विभोर भई गोपिन्ह समेत हैं॥

कौतुकि कृपाल करैं कौतुक अनेक भांति।
देखि मन भावत बखानि नहीं जात है॥
जानु पाणि धाई आइ देहरि पकड़ि ठाड़ो।
लांघि नहिं पावत मचलि रहि जात है॥
मातु पुलकाइ लाल गोदि में उठाई लेत।
हिय सो लगाइ दुलराइ बलि जात है॥
बावरे विचित्र शिशु लीला सर्वेश्वर की।
कोटि कवि गावैं नहीं वरनी सिरात है॥

१३९.

जानपाणि आंगन फिरत किलकारी मारी।
सांवरा सलोना शिशु रूप मन भावनो॥
केश कल कुंचित मुकुट मोर पंख राजै।
तिलक गोरोचन को लागत सुहावनो॥
अंग अंग भूषण की पूषण सरिस आभा।
पीत कटि काछनी लसति छवि छावनो॥
बावरा बखानैं किमि शोभा सर्वेश्वर की।
सुषमा अपार कोटि मार को लजावनो॥

१४०.

जननी जनक गृह काज में निरत जानि।
घुटुरुनि धाइ जाइ मटकी गहत है॥
माखन निकारि मुख माँहि लिपटाइ लेत।
दधि ढरकाइ तासों खेलिबो चहत है॥
बावरे यशोमति निहारि के निहाल होत।
अंक में उठाइ कछु झिड़कि कहत है॥
पोंछि दधि माखन सँवारि के सजाइ श्याम।
हिय सों लगाइ अति आनन्द लहत है॥

१४१.

एक दिन लाल को उबटि अन्हवाई अम्ब ।
भूषण वसन अंग अंगनि सजाइ कै ॥
अंक में उठाइ पय प्याइ हुलसाइ हिये ।
द्वार पै बिठाइ दियो पालने में लाइ के ॥
देववृन्द नाक से निहारत अनूप छवि ।
भोरे गोप गोपिन को सुकृत सराहि के ॥
मानहुँ शृंगार रस सोहै शिशु रूप धारि ।
बावरा मगन छवि अन्तर में ध्याइ के ॥

१४२.

मातु मन मुदित निहारति चरित्र चारु ।
चलत कन्हाई गिरि आपु उठि जात है ॥
लाँघि जात देहरी निकरि गृह द्वार बैठि ।
देखि ग्वाल बालन्ह को अति उल्लसात है ॥
मां मां कहि आइ अंब आंचल पकरि लेत ।
नेक पय पान हेतु ठाढ़ो मचलात है ॥
बावरे यशोमति की महिमा बखानै कौन ।
त्रिभुवन ईश जासु आगे रिरियात है ॥

१४३.

कबहुँ पकरि पट ठुनकत ठाढ़ होइके ।
मातु सों मचलि अंक लेन को कहत है ॥
कबहुँ निहारि गऊ वत्स ग्वाल बाल वृन्द ।
अंक से उतरि संग खेलिबो चहत है ॥
अमित उछाह हिय खेलत खिलौना लिये ।
घुटुरुनि धाई कल कंदुक गहत है ॥
क्रीड़त किलकि छवि देखत जो साँवरे की ।
लोचन को लाहु सोई बावरे लहत है ॥

१४४.

कबहुँ मचलि अम्ब अंक से उतरि जात।
धाइ जाइ बच्छ गहि क्रीड़त हँसत है॥
कबहुँ चलत किलकात मन मोद भरे।
कंज मुख माँहि दुइ दँतुलि लसत है॥
साँवरा सलोना सुकुमार अति मारहुते।
मानौ रसराज शिशुरूप बिलसत है॥
बावरा बखानै किमि सुकृत महान् ताको।
ब्रह्म बालरूप जाके उर में बसत है॥

१४५.

धन्य ब्रजभूमि धन्य भाग्य ब्रजबासिन्ह को।
धन्य वह गाँव जहाँ नंदजू को धाम है॥
ब्रह्म बनि बालक विराजैं जासु आंगन में।
करत फिरत बहु कौतुक ललाम है॥
सुकृत सराहैं सुर नंद औ यशोमति को।
जाके अंक सोहत सहज सुखधाम है॥
बावरा बखानै चारु चरित सुजान जानै।
चिन्तन किये ते चित्त पावत विराम है॥

१४६.

मुनि मनहारी शिशु लीला सर्वेश्वर की।
देखती ठगी सी रही मति गतिहीन ह्वै॥
हेरि हेरि हारी हिय उपमा निरुपम की।
वाणी विथकित भई आखर विहीन ह्वै॥
अगम अगोचर को गोचर स्वरूप शोभा।
निगम निहारते अचम्भित सो दीन ह्वै॥
बावरा बदत भगवान निज भक्त हेतु।
करत चरित्र चारु भाव के अधीन ह्वै॥
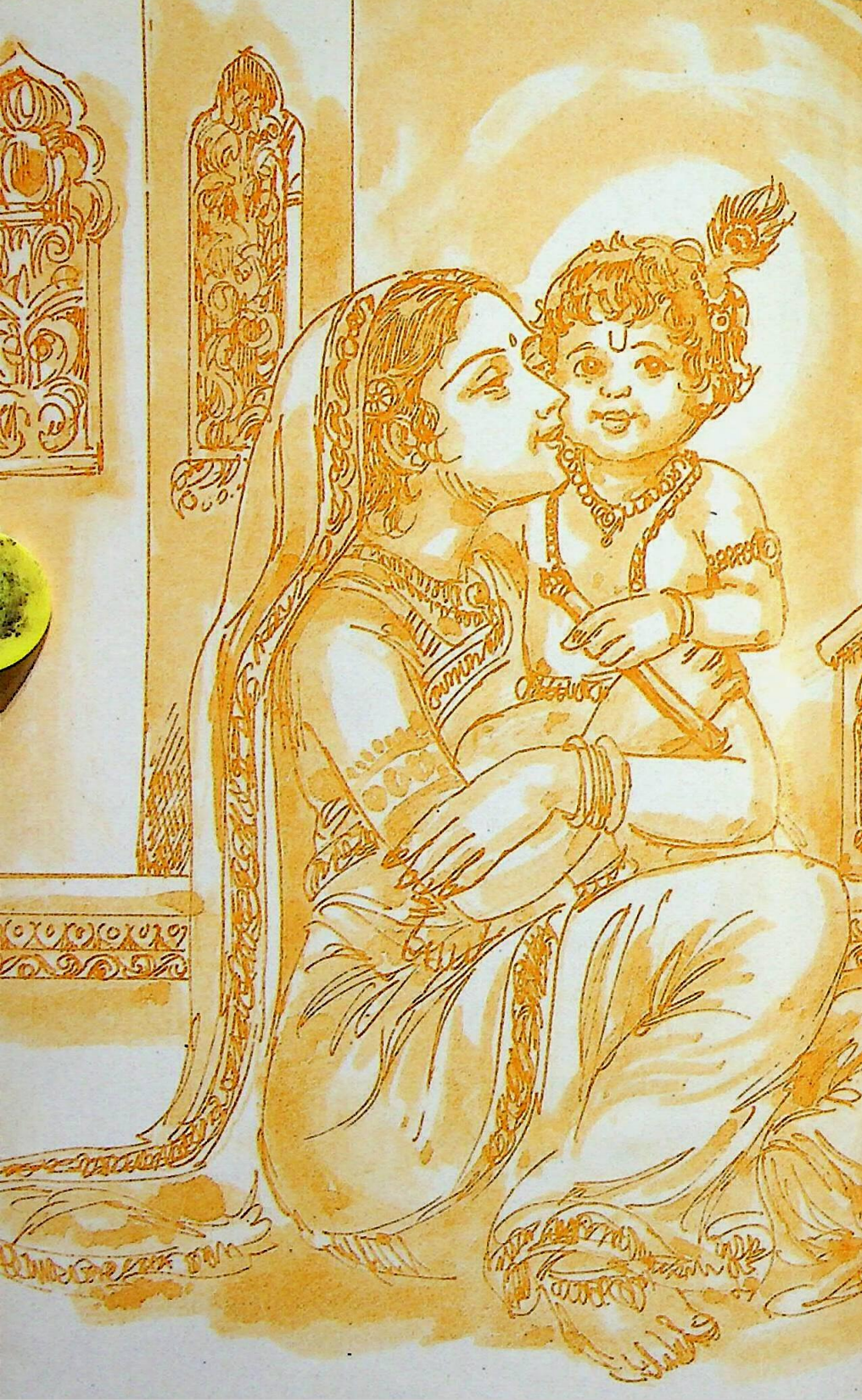
१४७.

श्री ब्रज वल्लभ को पावन चरित्र गाई।
ध्याई शिशु रूप पाप पुंज जरि जात है॥
खेलत हंसत किलकत छवि साँवरे की।
बारेक बिलोकि सुख सिन्धु लहरात है॥
व्रज रज खात मातु भय से सहमि जात।
दनुज निपाति सुर संकट सिरात है॥
बावरे ब्रजेश करैं कौतुक अनेक भान्ति।
चिन्तन किये ते भवसिंधु तरि जात है॥

१४८.

पावन चरित्र शिशु रूप सर्वेश्वर को।
चिन्तन किये ते त्रयताप को हरत है॥
गावत सुनत नर पावत परम धाम।
ध्यावत हिये में भक्ति भाव को भरत है॥
जनम अनेकन को काटत करम जाल।
पाठ को किये ते दोष दारिद दरत है॥
श्रद्धा शुचि स्नेह से पढ़त एक बार याको।
बावरे शतक सदा मंगल करत है॥

दोहा

निगम नेति आगम अगम अलख बतावत जाहीं।
सोइ सच्चिदानन्द धरि बाल रूप ब्रज माहीं॥
विहरत गोकुल गलिन्ह मँह ग्वाल बाल को संग।
मनमोहन को छवि निरख लाजत कोटि अनंग॥
बाँकी झाँकी श्याम की बसै जासु उर आय।
पाप ताप सों मुक्त हो आवागमन नसाय॥
शिशु लीला सर्वेश की सुकवि न पावें पार।
सो वरणें किमि बावरा लघुमति निपट गंवार॥
श्री व्रज-वल्लभ लाल को चरित चारु सुख धाम।
कहत सुनत नर बावरे लहत परम विश्राम॥
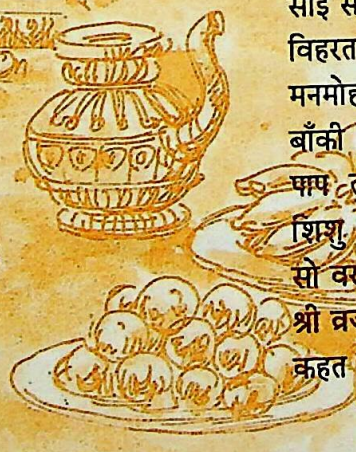
हमारे प्रकाशन

मानस महाकाव्य में नारी • गीता तत्त्व बोध
मानस के मोती • जीवन विज्ञान • भारत की आत्मा
सहज समाधि भली • योग पथ
नारी ! तुलसी की दृष्टि में
क्या वर्ण-व्यवस्था अभिशाप है ?
ब्रह्मविद्या विज्ञान—प्रथम
ब्रह्मविद्या विज्ञान—द्वितीय
तत्त्व चिन्तन • सन्त सन्देश
हिन्दू धर्म सूत्र • गीतोक्त बुद्धियोग
काव्य सुधा • श्री शिव शतक
Yoga for life • The Hindu & its way of Life
How to be a Yogi • Towards Divinity
Essence of the Gita • Basic Principles of Yoga
श्री हनुमत विनय पच्चीसी
गीता ज्ञान विज्ञान योग
आपकी अपनी बात
शिक्षा पद्धति
योगांकुर • साधना सूत्र • गीत कर्म विज्ञान • चण्डिका शतक
श्री हनुमत हृदय • समाधान • विश्व को हिन्दुओं का योगदान
मानस में वैदिक सिद्धान्त • श्री हनुमत हृदय • श्री श्याम शतक

दिव्यालोक मासिक पत्रिका
सद्विचारों के प्रचार और प्रसार की मासिक पत्रिका
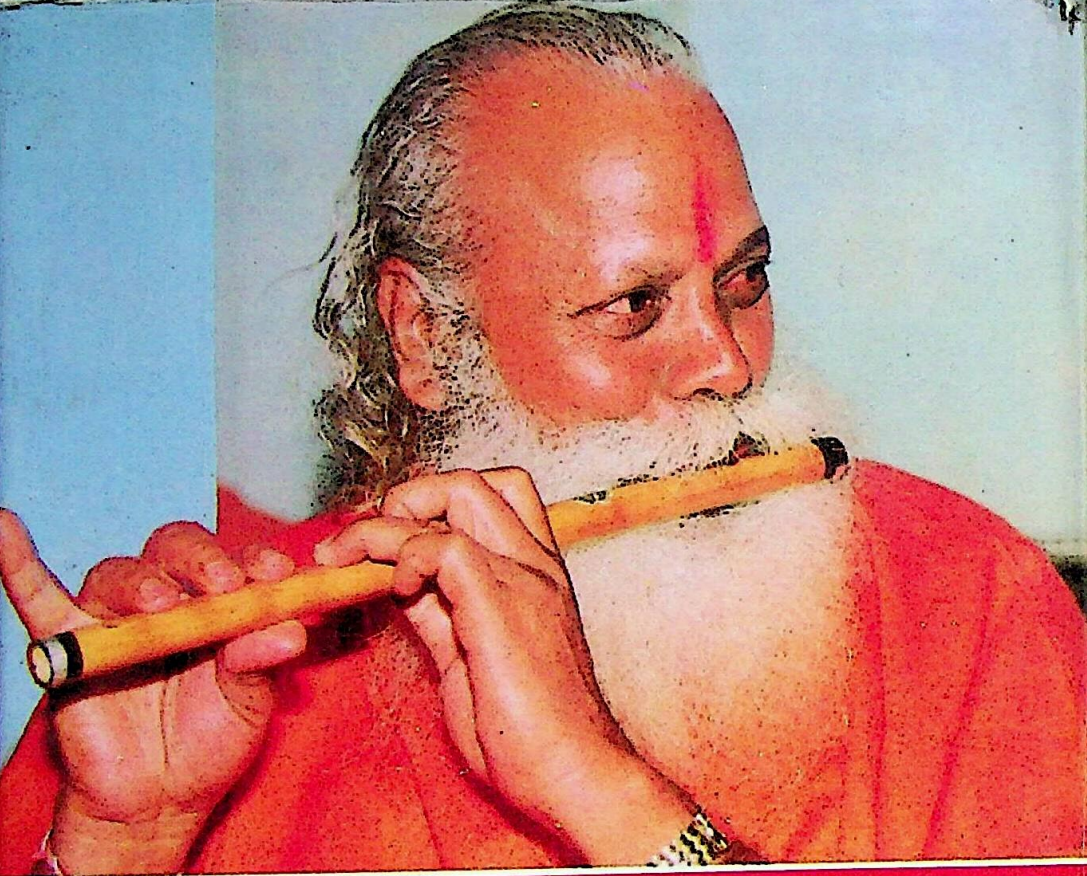
जासु पद पंकज की पावन पराग पाइ ।
मानत विरंचि निज जीवन सफल भी ।।
जासु तेज अंश से आभासित अनन्त भानु ।
जासु बल पाइ यह वसुधा अचल भी ।।
भुवन अनन्त की अधीश ईश ईशन की ।
यशुदा की गोद तांहि सुन्दर सुथल भी ।।
मातु पय पान किये खेलत खिलौना लिये ।
बावरा निहारि कै निहाल पल पल भी ।।

दिव्यालोक प्रकाशन
ब्रह्मर्षि आश्रम, विराट् नगर, पिंजौर, हरियाणा